thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 31 14 से 20 अगस्त, 2014 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 भा. कृ. 04

त्यागवृत्ति तथा समर्पण भाव से संगठित होकर महर्षि के मिशन को पूर्ण करने का व्रत लें

– स्वामी आर्यवेश

जींद में आर्य समाजों, आर्य युवक परिषद् तथा गणमान्य नागरिकों ने किया स्वामी आर्यवेश जी का भावपूर्ण सम्मान

श्रावणी पर्व के अवसर पर रविवार को हरियाणा के प्रसिद्ध नगर जीन्द में उत्साहपूर्ण वातावरण में जीन्द की आर्य समाजों, आर्य युवक परिषद् के सदस्यों, आर्य समाज के वरिष्ठ नेताओं तथा कार्यकर्ताओं ने स्वामी आर्यवेश जी के सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर सुशोभित होने की खुशी में सम्मान समारोह का भव्य आयोजन किया। कार्यक्रम का संयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा तथा नशाबन्दी परिषद् हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने किया।

इस अवसर पर सैकड़ों गणमान्य व्यक्तियों तथा कार्यकर्ताओं ने स्वामी आर्यवेश जी को बधाई दी तथा शॉल उढ़ाकर, फूल माला पहनाकर तथा स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिनन्दन किया। सम्मान करने वालों में सर्वप्रथम सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान तथा कर्मठ कार्यकर्ता ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम, नशाबन्दी परिषद् जीन्द के प्रधान डॉ. राजपाल आर्य, सत्यपाल आर्य, समाज सेवी वेद प्रकाश बेनीवाल, सुभाष श्योराण, (इण्डस पब्लिक स्कूल) रणधीर सिंह रेढू, सहदेव समर्पित, देवराज शास्त्री, वीरेन्द्र लाठर, कर्मपाल आर्य, सज्जन सिंह राठी, हरपाल सिंह, कुलदीप आर्य भजनोपदेशक, दलबीर सिंह आर्य आदि प्रमुख थे।

इस अवसर पर हरियाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि स्वामी आर्यवेश जी की कर्मठता तथा कार्य करने की क्षमता से मैं पूर्णरूप से परिचित हूँ ये जिस कार्य की जिम्मेदारी लेते हैं उसे पूर्ण निष्ठा और अथक परिश्रम से पूर्ण करते हैं। अब जब कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद का कार्यभार इन्होंने संभाला है तो मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि आर्य समाज का कार्य अब अत्यन्त तीव्र गति से चलेगा। स्वामी जी ने कहा कि जीन्द के इस स्वागत समारोह को सामान्य अर्थ में न लिया जाये यहाँ जिसका भी स्वागत किया गया है उन्होंने बड़े-बड़े कार्य किये हैं। उन्होंने स्मरण दिलाते हुए कहा कि यहीं से स्वामी इन्द्रवेश जी ने शराबबन्दी आन्दोलन की रूपरेखा रखी थी और उस आन्दोलन ने हरियाणा के निवासियों में अभूतपूर्व जागृति पैदा कर सफलता पाई थी। स्वामी आर्यवेश जी भी स्वामी इन्द्रवेश जी के शिष्य हैं। इनमें भी वही तेजस्विता, ऊर्जा और अथक परिश्रम करने की विशेषता है जो स्वामी इन्द्रवेश जी में थी। अत: मुझे पूर्ण विश्वास है कि स्वामी जी के नेतृत्व में आर्य समाज करवट बदलेगा और आर्य समाज को नई दिशा प्राप्त होगी। उन्होंने तन, मन, धन से स्वामी आर्यवेश जी का सहयोग करने की घोषणा की। वरिष्ठ अधिवक्ता श्री रणधीर सिंह रेढू ने स्वामी आर्यवेश जी को बधाई देते हुए उनके समक्ष सुझाव रखा कि हरियाणा में खाप पंचायतों का भारी प्रभाव तथा महत्त्व है और खाप पंचायतों को विश्वास में लेकर उनको अपने कार्यक्रमों की जानकारी देकर उनका सहयोग प्राप्त किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के पास नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, पाखण्ड तथा अन्धविश्वास को दूर करने जैसे महत्त्वपूर्ण मुद्दे हैं और आर्य समाज इन पर कार्य भी कर रहा है यदि खाप पंचायतों का सहयोग लेकर हम कार्य करें तो हम एक बड़ी शक्ति बनकर उभर सकते हैं और आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ा सकते हैं। उन्होंने कहा कि इस कार्य में हम आपका पूरा सहयोग करेंगे तथा खाप पंचायत के साथ बैठक करके कार्यक्रम बनाकर सुचारू ढंग से आगे की योजनाएं बनाई जा सकेगी

इन्डस पब्लिक स्कूल के प्रशासक श्री सुभाष श्योराण ने स्वामी आर्यवेश जी को बधाई देते हुए आशा व्यक्त की और कहा कि स्वामी जी के नेतृत्व में लाखों की संख्या में युवा एकत्र होगा। स्वामी जी में वह चुम्बकीय शक्ति है कि युवाओं में स्वामी जी के प्रति आकर्षण पैदा होता है तथा पूर्व में भी स्वामी जी युवकों में जागृति पैदा करते रहे हैं। उन्होंने कहा कि आज हमारी युवा शक्ति पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव में आकर दिग्भ्रमित और किंकर्त्तव्यविमूढ़ सी होती जा रही है इस युवा शक्ति को बचाने के लिए स्वामी जी के नेतृत्व में सार्वदेशिक सभा राष्ट्रीय स्तर पर आन्दोलन चलाये और युवा शक्ति में भारतीय संस्कृति के प्रति आकर्षण पैदा कर आर्य समाज से जोड़ने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि हम सबको पूर्ण निष्ठा के साथ स्वामी जी के हाथ मजबूत करने की आवश्यकता है। श्री कुलदीप आर्य, सहदेव समर्पित तथा देवराज शास्त्री ने भी स्वामी आर्यवेश जी के आकर्षक व्यक्तित्व का गुणगान करते हुए अपने भजनों से कार्यक्रम में समा बांध दिया।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी आर्यवेश जी ने आह्वान किया कि आप सब लोग अपनी-अपनी आर्य समाजों में महिलाओं और युवाओं को वरीयता प्रदान करते हुए सदस्य बनाने का अभियान चलायें। उन्होंने कहा कि आज समाज में स्वयम्भू भगवानों और स्वार्थी साधुओं की बाढ़ सी आई हुई है और महिलाएं अपनी धर्मभीरूता के कारण आसानी से उनके जाल में फंस जाती हैं। आज महिलाओं को जागरूक करने की अत्यन्त आवश्यकता है यदि महिलाओं में जागरूकता आ गई तो इन बनावटी साधुओं का धन्धा अपने आप चौपट हो जायेगा। अत: हमारा प्रयास होना चाहिए कि अधिक से अधिक महिलायें आर्य समाज से जुड़ें।

इसी प्रकार युवाओं को भी अधिक से अधिक संख्या में आर्य समाज में लायें और उन्हें सदस्य बनाने का प्रयास करें। युवाओं को शिक्षित-प्रशिक्षित कर आर्य समाज में उनकी ऊर्जा का विशेष लाभ लिया जा सकता है। स्वामी जी ने कहा कि श्रावणी पर्व हम सब मना रहे हैं और श्रावणी का पर्व वेदों के स्वाध्याय का पर्व है अत: प्रत्येक परिवार में वेदों का होना आवश्यक है। सार्वदेशिक सभा का कार्यभार सम्भालने के बाद सबसे पहला कार्य हमने वेदों के प्रकाशन का किया है। घर-घर में वेद पहुंचाने के संकल्प के साथ हमने बहुत कम मूल्य पर मात्र 2100/- रुपये में वेद देने की योजना बनाई है। मेरा आप सबसे आग्रह है कि आप सार्वदेशिक सभा में शीघ्रातिशीघ्र 2100/- रुपये भेजकर वेद का सैट बुक करवायें और वेदों के अध्ययन का कार्य प्रारम्भ करें। स्वामी जी ने कहा कि आर्य समाज में चल रहे बिखराव को समाप्त करने के लिए प्रत्येक आर्य का यह प्रयास होना चाहिए कि आर्य समाज में बिखराव की स्थिति समाप्त हो। क्योंकि इस बिखराव और फूट के कारण आर्य समाज की छवि को गहरा धक्का लगा है और आर्य समाज जो कार्य करना चाहता है उसमें गति का अभाव पैदा हो गया है। अत: यह अत्यन्त आवश्यक है कि बिखराव की स्थिति समाप्त हो और संगठन मजबूत हों। देश की वर्तमान परिस्थितियों पर विस्तार से विचार प्रकट करते हुए स्वामी जी ने कहा कि यदि आर्य समाज की सारी शक्ति एकत्र हो जायें और बिखराव समाप्त हो जाये तो आर्य जगत की व्यापक शक्ति के समक्ष बड़ी-बड़ी सरकारों को भी झुकाया जा सकता है तथा अपनी प्रमुख मांगों को मनवाया जा सकता है। स्वामी जी ने स्पष्ट करते हुए कहा कि आर्य समाज के गुरुकुलों, आश्रमों, विद्यालयों तथा अन्य संस्थाओं में काफी सुधार की आवश्यकता है जिसके लिए सरकार से सहयोग लेकर हम अपनी संस्थाओं को एक आदर्श नमूने के रूप में देश के समक्ष प्रस्तुत कर सकते हैं। इसी प्रकार नशाखोरी, महिलाओं पर अत्याचार, जातिवाद एवं साम्प्रदायिकता जैसी मानसिकता के विरुद्ध पूरे राष्ट्र में जन-चेतना के माध्यम से प्रभावी वातावरण तैयार किया जा सकता है। आवश्यकता है परस्पर मिल बैठकर सभी विवादों को सुलझाने की और एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर कार्य करने की। हमारे समस्त संन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान, भजनोपदेशक, पुरोहित वर्ग एवं योगाचार्य तथा युवा संगठन में जुटे हुए समस्त युवा कार्यकर्ता संगठन में एकता के बाद अपनी ऊर्जा का सही सदुपयोग कर सकते है। आर्य समाज में चल रहे विघटन से हमारी सारी शक्तियां बिखर गई हैं, और परस्पर विरोधाभास की स्थिति बन गई है।

स्वामी जी ने कहा कि श्रावणी के इस पावन पर्व पर आप चाहे किसी भी गुट से जुड़े हों आप अपने हृदय में झांककर देखें, सोचें कि महर्षि की इस वाटिका को अपने त्याग और समर्पण से कैसे हरा-भरा बना सकते हैं। हमारे नेताओं और उन महानुभावों को जो किसी भी रूप में विवादों से जुड़े हैं मेरा विनम्र निवेदन है कि वे त्यागवृत्ति तथा समर्पण भाव से एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव प्रकट करें और महर्षि के मिशन को संगठित होकर पूर्ण करने का व्रत लें तो एक नया अध्याय जुड़ सकता है तथा न केवल आर्य समाज का अपितु पूर्ण मानवता का भविष्य उज्ज्वल एवं उन्नत हो सकता है।

स्वामी जी ने सभी आर्यजनों का आह्वान करते हुए कहा कि जब तक यह विवाद समाप्त नहीं होते अपने-अपने स्तर पर कार्य की गति बढ़ायें तथा आर्य नेताओं पर दबाव बनायें ताकि मिल-जुलकर एकता के साथ कार्य करें। क्योंकि दान से प्राप्त राशि को कोर्ट कचहरी में लुटाना उचित नहीं ठहराया जा सकता यह धनराशि आर्य समाज को गति प्रदान करने में लगायी जानी चाहिए। अत: आप सब संगठनात्मक एकता के लिए अपने-अपने स्तर पर पूर्ण प्रयास करें।

अन्त में स्वामी रामवेश जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों को धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सुस्वाद भोजन ग्रहण करने के बाद समारोह का समापन हुआ।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली में

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण अधिवेशन आगामी 13 व 14 सितम्बर, 2014 को दिल्ली के आर्य समाज क्लब रोड, शालीमॉर बाग पश्चिम में आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। सार्वदेशिक सभा से सम्बद्ध सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधियों को अधिवेशन की विषय सूची (एजेण्डा) पृथक डाक से भेजी जा रही है। सभी प्रतिनिधियों से निवेदन है कि दिल्ली में आयोजित होने वाले सभा के साधारण अधिवेशन में भाग लेने के लिए उपरोक्त निर्धारित तिथि एवं समय पर सम्मेलन स्थल पर पधारकर संगठन को सक्रिय बनाने में सहयोग प्रदान करें।

– प्रो. विट्ठलराव आर्य, मंत्री सार्वदेशिक सभा

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

उपासना और मूर्तिपूजा

– स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वेद में मूर्तिपूजा का विधान नहीं है। वेद तो घोषणापूर्वक कहते हैं –

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश। (यजुर्वेद 32.3)

अर्थात् जिसका नाम महान यशवाला है उस परमात्मा की कोई मूर्ति, तुलना, प्रतिकृति प्रतिनिधि नहीं है।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस देश में मूर्तिपूजा कब प्रचलित हुई और किसने चलाई?

महर्षि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में प्रश्नोत्तर रूप में इस सम्बन्ध में लिखते हैं –

प्र. मूर्तिपूजा कहां से चली?

उ. जैनियों से।

प्र. जैनियों ने कहां से चलाई?

उ. अपनी मूर्खता से।

पण्डित जवाहरलाल नेहरू के अनुसार, मूर्तिपूजा बौद्धकाल से प्रचलित हुई। वे लिखते हैं – ''यह एक मनोरंजक विचार है कि मूर्तिपूजा भारत में यूनान से आई। वैदिक धर्म हर प्रकार की मूर्ति तथा प्रतिमा-पूजन का विरोधी था। उस काल (वैदिकयुग) में देवमूर्तियों के किसी प्रकार के मंदिर नहीं थे। ....प्रारम्भिक बौद्ध धर्म इसका घोर विरोधी था ..... पीछे से स्वयं बुद्ध की मूर्तियाँ बनने लगी। फारसी तथा उर्दू भाषा में प्रतिमा अथवा मूर्ति के लिए अब भी बुत शब्द प्रयुक्त होता है जो बुद्ध का रूपांतर है।'' (हिन्दुस्तान की कहानी पृ. 172)

''नहीं, नहीं मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है, पुनः इस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है।

एक अन्य स्थल पर वे लिखते हैं –

''ग्रीस और यूनान आदि देशों में देवताओं की मूर्तियां पुजती थीं। वहाँ से भारत में मूर्तिपूजा आई। बौद्धों ने मूर्तिपूजा आरम्भ की। फिर अन्य जगह फैल गई।'' (विश्व इतिहास की झलक – पृ. 694)

इन उद्धरणों से इतना निश्चित है कि मूर्तिपूजा हमारे देश में जैन-बौद्धकाल से आरम्भ हुई। जिस समय भारत में मूर्तिपूजा आरम्भ हुई और लोग मन्दिरों में जाने लगे तो भारतीय विद्वानों ने इसका घोर खण्डन किया। मूर्तिपूजा खण्डन में उन्होंने यहाँ तक कहा –

गजैरापीड्यमानोऽपि न गच्छेज्जैनमन्दिरम् (भविष्य पु. प्रतिसर्गपर्व 3-28-53) अर्थात् यदि हाथी मारने के लिए दौड़ा आता हो और जैनियों के मन्दिर में जाने से प्राणरक्षा होती हो तो भी जैनियों के मन्दिर में नहीं जाना चाहिए।

लेकिन ब्राह्मणों, उपदेशकों और विद्वानों के कथन का साधारण जनता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा और उन लोगों ने भी मन्दिरों का निर्माण किया। जैनियों के मन्दिरों में नग्न मूर्तियाँ होती थी। इन मन्दिरों में भव्यवेश में भूषित हार-श्रृंगारयुक्त मूर्तियों की स्थापना और पूजा होने लगी।

भारत में पुराणों की मान्यता है लेकिन पुराणों में भी मूर्तिपूजा का घोर खण्डन किया गया है।

यस्यात्मबुद्धि कुणपे त्रिधातुके। स्वधी कलत्रादिषु भौम इज्यधी॥

यत्तीर्थबुद्धिः सलिले न कहिर्चिज्। जनेष्वभिज्ञेषु स एव गोखारः॥ (श्रीमद भागवत 10-84-13)

अर्थात् जो वात, पित और कफ तीन मलों से बने हुए शरीर में आत्मबुद्धि रखता है, जो स्त्री आदि में स्वबुद्धि रखता हैं, जो पृथ्वी से बनी हुई पाषाण मूर्तियों में पूज्य बुद्धि रखता है, ऐसा व्यक्ति गोखर गौओं का चारा उठाने वाला गधा है।

न हयम्मयानि तीर्थानि न देवा मृच्छिलामया।

ते पुनन्त्यापि कालेन विष्णुभक्ताः क्षणादहो॥ (देवी भागवत 9-7-42)

अर्थात्, पानी के तीर्थ नहीं होते तथा मिट्टी और पत्थर के देवता नहीं होते। विष्णुभक्त तो क्षण मात्र में पवित्र कर देते हैं। परन्तु वे किसी काल में भी मनुष्य को पवित्र नहीं कर सकते।

दर्शन शास्त्रों में भी मूर्तिपूजा का निषेध है

न प्रतीके न ही सः (वेदान्त दर्शन 4-1-4)

अर्थात् – प्रतीक में, मूर्ति आदि में परमात्मा की उपासना नहीं हो सकती, क्योंकि प्रतीक परमात्मा नहीं है।

संसार के सभी महापुरुषों और सुधारकों ने भी मूर्तिपूजा का खण्डन किया है।

श्री शंकराचार्य जी परपूजा में लिखते हैं –

पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम्।

स्वच्छस्य पाद्यमघर्यं च शुद्धस्याचमनं कुतः॥

निर्लेपस्य कुतो गन्धं पुष्पं निर्वसनस्य च।

निर्गन्धस्य कुतो धूपं स्वप्रकाशस्य दीपकम॥

अर्थात्, ईश्वर सर्वत्र परिपूर्ण है फिर उसका आह्वान कैसा?जो सर्वाधार है उसके लिए आसन कैसा?जो सर्वथा स्वच्छ एवं पवित्र है उसके लिए पाद्य और अर्घ्य कैसा?जो शुद्ध है उसके लिए आचमन की क्या आवश्यकता?

निर्लेप ईश्वर को चन्दन लगाने से क्या?जो सुगन्ध की इच्छा से रहित है उसे पुष्प क्यों चढ़ाते हो?निर्गन्ध को धूप क्यों जलाते हो?जो स्वयं प्रकाशमान है उसके समक्ष दीपक क्यों जलाते हो?

चाणक्य जी लिखते हैं –

अग्निहोत्र करना द्विजमात्र का कर्त्तव्य है। मुनि लोग हृदय में परमात्मा की उपासना करते हैं। अल्प बुद्धि वाले लोग मूर्तिपूजा करते हैं। बुद्धिमानों के लिए तो सर्वत्र देवता है।

(चाणक्य नीति 4-19)

कबीरदास जी कहते हैं ...

पाहन पूजे हरि मिले तो हम पूजे पहार।

ताते तो चाकी भली पीस खाए संसार॥

दादु जी कहते हैं –

मूर्त गढ़ी पाषण की किया सृजन हार।

दादू सांच सूझे नहीं यूं डूबा संसार॥

गुरुनानकदेव जी का उपदेश है –

पात्थर ले पूजहि मुगध गंवार।

ओहिजा आपि डूबो तुम कहा तारनहार॥

कुछ अज्ञात लोगों के कथन –

पत्थर को तू भोग लगावे वह क्या भोजन खावे रे।

अन्धे आगे दीपक बाले वृथा तेल जलावे रे॥

यह क्या कर रहे हो किधर जा रहे हो।

अंधेरे में क्यों ठोकरें खा रहे हो॥

बनाया है स्वयं जिसको हाथों से अपने।

गजब है! प्रभु उसको बतला रहे हो॥

बुतपरस्तों का है दस्तूर निराला देखो।

खुद तराशा है मगर नाम खुदा रखा है॥

सच तो यह है खुदा आखिर खुदा है और बुत है बुत।

सोच! खुद मालूम होगा यह कहाँ और वह कहाँ॥

महर्षि दयानन्द जी का कथन –

''मूर्ति जड़ है, उसे ईश्वर मानोगे तो ईश्वर भी जड़ सिद्ध होगा। अथवा ईश्वर के समान एक और ईश्वर मानों तो परमात्मा का परमात्मापन नहीं रहेगा। यदि कहो कि प्रतिमा में ईश्वर आ जाता है तो ठीक नहीं। इससे ईश्वर अखण्ड सिद्ध नहीं हो सकता। भावना में भगवान् है यह कहो तो मैं कहता हूँ कि काष्ठ खण्ड में इक्षु दण्ड की और लोष्ठ में मिश्री की भावना करने से क्या मुख मीठा हो सकता है?मृगतृष्णा में मृग जल की बहुतेरी भावना करता है परन्तु उसकी प्यास नहीं बुझती है। विश्वास, भावना और कल्पना के साथ सत्य का होना भी आवश्यक है।'' (दयानन्द प्रकाश – पृ. 264)

प्रश्न – मूर्ति पूजा सीढ़ी है। मूर्तिपूजा करते-करते मनुष्य ईश्वर तक पहुँच जाता है।

उत्तर – मूर्तिपूजा परमात्मा प्राप्ति की सीढ़ी नहीं है। सीढ़ी तो गंतव्य स्थान पर पहुँचने के पश्चात् छूट जाती है परन्तु हम देखते हैं कि एक व्यक्ति आठ वर्ष की आयु में मूर्तिपूजा आरम्भ करता है और अस्सी वर्ष की अवस्था में मरते समय तक भी इसी दलदल से निकल नहीं पाता।

एक बच्चा दूसरी कक्षा में पढ़ता है, उसे पांच और छः का जोड़ करना हो तो वह पहले स्लेट अथवा कापी पर पांच लकीरे खींचता है फिर उसके पास छः लकीरें खींचता है, उन्हें गिनकर वह ग्यारह जोड़ प्राप्त करता है। परन्तु तीसरी अथवा चौथी कक्षा में पहुंचने पर वह उंगलियों पर गिनने लग सकता है और पांचवीं-छठी कक्षा में पहुंचकर वह मानसिक गणित से ही जोड़

''मूर्ति जड़ है, उसे ईश्वर मानोगे तो ईश्वर भी जड़ सिद्ध होगा। अथवा ईश्वर के समान एक और ईश्वर मानों तो परमात्मा का परमात्मापन नहीं रहेगा। यदि कहो कि प्रतिमा में ईश्वर आ जाता है तो ठीक नहीं। इससे ईश्वर अखण्ड सिद्ध नहीं हो सकता। भावना में भगवान् है यह कहो तो मैं कहता हूँ कि काष्ठ खण्ड में इक्षु दण्ड की और लोष्ठ में मिश्री की भावना करने से क्या मुख मीठा हो सकता है?मृगतृष्णा में मृग जल की बहुतेरी भावना करता है परन्तु उसकी प्यास नहीं बुझती है। विश्वास, भावना और कल्पना के साथ सत्य का होना भी आवश्यक है।''

लेता है। यदि मूर्तिपूजा सीढ़ी होती तो मूर्तिपूजक उन्नति करते-करते मन में ध्यान करने लग जाते परन्तु ऐसा होता नहीं है, अतः महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है :-

''नहीं, नहीं मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य चकनाचूर हो जाता है, पुनः इस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है।

सत्यार्थ प्रकाश , एकादश समुल्लास)

ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ी तो है महर्षि पतंजलि कृत – ''अष्टांग योग'' – जिसके अंग – यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि है। विद्वान, ज्ञानी और योगीजन ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ियाँ हैं, पाषाण आदि नहीं।

(साभार स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती कृत उपासना और मूर्ति पूजा)

thearyasamaj.org

हिन्दुत्व की ठेकेदारी

-डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियान

...गतांक से आगे

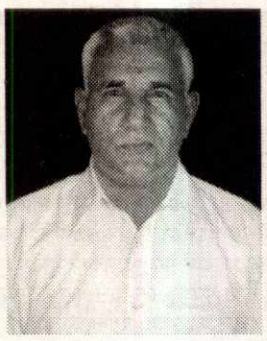

(ठ) वेद-पुराणों में कहीं भी साईं के अवतार का उल्लेख नहीं है यह सही हो सकता है लेकिन वेद तो निराकार परमात्मा को मानते हैं, उनमें अवतारवाद, अनेकेश्वरवाद, मूर्तिपूजा, तीर्थाटन, श्राद्ध-तर्पण, कांवड़ यात्रा, कुम्भ स्नान आदि का उल्लेख नहीं है फिर पुराण को ही प्रमाण मानकर कैसे अनेक अवतार गढ़ लिये गये, कैसे उनके नाम पर सम्प्रदाय खड़े किये गये?जब मूल में ही भूल है तो सुधार के लिए किसी अन्य को कैसे कोसा जा सकता है, कैसे उसे नसीहत दी जा सकती है?

(ड) यदि घर व मन्दिरों में साईं की मूर्ति लगा कर पूजा करना ईश्वरीय आराधना नहीं है तो असंख्य कल्पित देवी-देवताओं जिनका सिवाय भारत के कहीं अस्तित्व नहीं है, की मूर्तियाँ घरों-मन्दिरों में लगाना व उनकी पूजा करना कैसे ईश्वरीय आराधना मान ली गई है?भारत में मूर्तिपूजा का इतिहास अधिक लम्बा नहीं है, भारत में यूनानियों के प्रवेश के साथ मूर्तिपूजा प्रारम्भ होती है। इससे पूर्व तो निराकार परमात्मा का ही ध्यान, मनन, चिंतन होता था। बौद्ध व जैनियों में जब मूर्तिपूजा शुरू हुई और उन पर चढ़ावा चढ़ने लगा तो पौराणिकों ने भी विविध देवी-देवता गढ़ कर, उनकी मूर्तियाँ बनाकर, देवालयों में स्थापित कीं। धीरे-धीरे यह ब्राह्मण परिवारों का रोजागार, व्यवसाय बनता चला गया जो आज भी बना हुआ है अत: इसे भक्ति, आराधना, तपस्या का पर्याय मानना गलत है।

(ढ) सनातनी परम्परा में सभी देवी-देवताओं के मन्त्र व तन्त्र हैं और साईं के नहीं हैं तो क्या वे संत या पूज्य नहीं रहे हैं?बौद्ध, महावीर, ईसा, मुहम्मद के भी तो मन्त्र व तन्त्र नहीं हैं फिर उनका अस्तित्व कैसे बना रहने दिया गया?मन्त्र व तन्त्र की आवश्यकता होगी तो साईं भक्त भी किसी संस्कृत के विद्वान् से गढ़वा लेंगे जैसे सनातनियों ने कभी गढ़वाये थे। सनातनियों के मन्त्र व तन्त्र वैदिक नहीं हैं वे बाद में ही गढ़े गये हैं। साईं की गायत्री तैयार कर ली गई है तो शेष मन्त्र तन्त्र तैयार कराने में क्या लगता है। हम समझ पाने में असमर्थ हैं कि आखिर इस समूचे फर्जीवाड़े का धर्म, भक्ति, अध्यात्म से क्या सम्बन्ध हो सकता है?

(ण) सनातन धर्म में साईं भक्ति की मिलावट शंकराचार्य जी के लिए यदि असहनीय है तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के लिए वैदिक धर्म में सनातनी परम्परा की मिलावट असहनीय थी। इस समस्या का समाधान सनातनधर्मियों ने ऋषिवर को बार-बार विषपान कराके किया और अन्तत: उनकी जान लेकर ही उन्हें संतोष हुआ। क्या शंकराचार्य के साथ यही व्यवहार साईं-भक्तों को करना चाहिए तभी इस समस्या का समाधान निकलेगा?मिलावट तो मिलावट है वह चाहे सनातनी परम्परा में हो अथवा वैदिक परम्परा में। नीर-क्षीर विवेक से सत्य को ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने से इस समस्या का समाधान निकल सकता है। अपने धर्म के मूल को खोजना और स्वीकारना ही इस समस्या का समधान है। ऋषि दयानन्द के इस प्रयास को आगे बढ़ाकर ही धर्म, भक्ति, अध्यात्म का पथ प्रशस्त हो सकता है।

(त) हिन्दू देवी देवताओं के समक्ष साईं को उच्चासन देना शंकराचार्य जी को अशोभनीय, असहनीय लग सकता है लेकिन साईं भक्त ऐसा करके जो संदेश देना चाहते हैं वह यही है कि कल्पित देवी-देवताओं की तुलना में एक ऐतिहासिक संत कहीं अधिक श्रेष्ठ, प्रेरक और सहायक है। यदि सनातनियों के देवी-देवता सच्चे हैं, चमत्कारी हैं, सर्वव्यापी हैं, सर्वशक्तिमान हैं तो शंकराचार्य जी टेंशन क्यों ले रहे हैं, यही न साईं भक्तों को सबक दे देंगे, उन्हें सन्मार्ग पर ले आयेंगे। यह तो और भी अच्छा है कि सनातन धर्म मन्दिरों में साईं की मूर्ति लग रही है, इससे तो देवी-देवताओं व साईं का प्रत्यक्ष आमना-सामना हो जायेगा जिससे कोई समाधान शीघ्र निकल आयेगा। सनातनधर्म मन्दिरों की आज क्या दशा है?शैव और वैष्णव दो अलग सम्प्रदाय थे, इनके मन्दिर अलग-अलग होते थे लेकिन आज एक ही मन्दिर में शिव और विष्णु की प्रतिमाएं साथ-साथ मिलती हैं। अब शनिदेव भी स्थापित होने लगे हैं क्योंकि उनके भक्तों की संख्या गत 5-7 साल से अधिक बढ़ गई है और उनके अलग मन्दिर बनने लगे थे। कुछ हिन्दू आचार्य स्वामी शंकराचार्य की मुहिम से सहमत नहीं है। उनका मानना है कि हमें समन्वयवादी होना चाहिए, जब असंख्य देवी-देवता मन्दिर में विराजमान हैं तो एक साईं के आने से कौन सी आफत आ जायेगी, इससे साईं भक्तों का चढ़ावा मन्दिरों को ही तो प्राप्त होगा। इसके साथ-साथ साईं के अलग व स्वतंत्र मंदिर बनाने की प्रवृत्ति पर अंकुश भी लगेगा।

(थ) गुरुद्वारे, गिरजाघर और मस्जिदों में साईं की मूर्ति इसलिए नहीं लग रही क्योंकि मूर्तिपूजा के बारे में उन सबकी जैसी स्पष्ट धारणा है वैसी सनातनधर्मियों की नहीं है। जैसा पाखण्ड सनातनधर्मियों ने अपना रखा है वैसा इन सम्प्रदायों ने नहीं अपना रखा। जैसे समन्वयवादी सनातनधर्मी हैं वैसे ये नहीं हैं। जब हिन्दू खुद मन्दिरों में साईं की मूर्ति स्वेच्छा से लगा-लगवा रहे हैं, जबरन ये काम नहीं हो रहा है तो शंकराचार्य जी का एतराज अधिक अर्थ नहीं रखता।

(द) स्वामी शंकराचार्य जी के इस कथन में गहन सच्चाई है कि कुछ लोग हमसे ही सीख कर हमारे गुरु बन रहे हैं। उपर्युक्त पंक्तियों में हम बारबार इसी सत्य को दोहराते आ रहे हैं कि भूल मूल में रही है जिसे सुधारना कठिन है। मिलावट का धंधा सनातन धर्म ने शुरू किया, बौद्ध व जैनियों की देखा-देखी मूर्ति पूजा सनातनधर्मियों ने चालू की। परमात्मा के अनेक गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर उन्हें जिन विविध नामों से वेद में पुकारा गया पुराणों ने उन सभी नामों के आधार पर अलग-अलग कल्पित देवी-देवता गढ़ लिये, अवतार, अंशावतार गढ़ लिये, भविष्यवाणी कर कटिक अवतार की कल्पना भी कर ली। इस समूचे खेल को समझ कर यदि साईं भक्त अपना खेल खेल रहे हैं, गुरु बन रहे हैं, सनातनियों

को उनकी अपनी ही चालों से रिझा रहे हैं तो शंकराचार्य जी आहत नजर क्यों आ रहे हैं?

(ध) शंकराचार्य जी के कहने से साईं भक्त न तो राम की पूजा बन्द करेंगे, न गंगा स्नान बन्द करेंगे, न हर-हर महादेव का जयकारा छोड़ेंगे क्योंकि हिन्दुओं को भ्रमित रखने व आकर्षित करने का यही तो तन्त्र है जिसे शंकराचार्य जी तोड़ना चाहते हैं और साईं ट्रस्ट जिसे विकसित कर भुनाना चाहता है। पाखण्ड को पाखण्ड का अर्घ्य मिलेगा तभी तो वह अंकुरित, पल्लवित, पुष्पित और फलित होगा। इसे मिलावट मानें या समन्वय कहें यही तो साईं को ओ३म् साईं बना रहा है, उसे मुस्लिम से हिन्दू बना रहा है। माँ गंगा का आह्वान कर जब घर-घर मोदी हो सकते हैं तो साईं भक्त उसमें डुबकी लगा कर घर-घर क्यों नहीं जा सकते?सनातनधर्म ने जब गंगा को साम्प्रदायिक और राजनीतिक ध्रुवीकरण के औजार के रूप में विकसित कर दिया है तो साईं भक्त इसका लाभ उठाने की चेष्टा कर रहे हैं तो किसी को आपत्ति क्यों होनी चाहिए?सनातनधर्म को उन्हीं की चालों व औजारों से साईं भक्त मात दे रहे हैं इसीलिए उनका तिलमिलाना स्वाभाविक है। इसके नतीजे भयावह निकल सकते हैं इसलिए शेष शंकराचार्य चुप्पी साधे बैठे हैं और खुलकर स्वरूपानन्द जी का साथ नहीं दे रहे हैं।

(न) साईं का गायत्री मन्त्र बनाना अनधिकृत चेष्टा है, शंकराचार्य जी के इस कथन से हम सहमत हैं लेकिन इस प्रकार की अनधिकृत चेष्टाएं जब स्वयं सनातन धर्म करता रहा है तो कौन कैसे इसके लिए दूसरे को रोक सकता है?वेद, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति के अनेक मन्त्रों व श्लोकों के अनर्थकारी अर्थ करके सनातनधर्मी विद्वानों ने कुछ का कुछ बना दिया। यज्ञों में बलि प्रथा का प्रारम्भ इसी अनधिकृत चेष्टा का दुष्परिणाम था। परमात्मा के गुण, कर्म स्वभाववाची नामों के आधार पर विविध देवी-देवताओं की कल्पना करना भी ऐसी ही अनधिकृत चेष्टा थी। वेदों के एकेश्वरवाद को अनेकेश्वरवाद में ढालना भी ऐसी ही चेष्टा थी। वेदों में अभिचार, वशीकरण, अश्लीलता ढूंढ़ना भी ऐसी ही चेष्टा थी। गणित ज्योतिष के स्थान पर फलित ज्योतिष को आरोपित करना भी ऐसी दुष्चेष्टा थी। स्वर्ग-नरक की कल्पना करना भी ऐसा ही प्रसंग है। कर्म की अपेक्षा भाग्य को अधिक महत्त्व देना भी ऐसी ही मौलिक भूल थी। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए समय-समय पर शास्त्रों में प्रक्षेपण अर्थात् मिलावट की गई और बाल-विवाह, सती-प्रथा, जाति प्रथा, बलि प्रथा जैसी कुरीतियों का पोषण किया गया। गुण कर्म स्वभाव पर आधारित परिवर्तनशील वर्ण व्यवस्था को जाति और व्यवसाय आधारित बना कर अपरिवर्तित और निरंकुश बनाना भी ऐसी ही चेष्टा थी। इन अनधिकृत चेष्टाओं की विस्तृत सूची है, कहाँ तक गिनायें, जिन पर सनातनधर्म ने आज तक न तो प्रायश्चित किया है और न अपनी इन भूलों को सुधारा है। यह सम्भव भी नहीं है क्योंकि जो तन्त्र विकसित हो चुका है उसमें शंकराचार्यों के भी हाथ बंधे हुए हैं। वे मानने को तैयार नहीं हैं कि आदि गुरु शंकराचार्य ने नारी को जो नरक का द्वार कहा था वह गलत कहा था। नारी व शुद्र के लिए वेद को प्रतिबंधित किया था, वह गलत किया था। शंकराचार्य लकीर के फकीर हैं इसलिए उनके अधिमान का क्षरण होता रहा है। नीर-क्षीर-विवेक का प्रयोग करते हुए वे सकुचाते हैं इसलिए निरन्तर अपना सम्मान और महत्ता खोते जा रहे हैं।

मठाधीश से अधिक की उनकी अब कोई हैसियत नहीं रही है। उनकी अपनी वैचारिक संकीर्णता के कारण इस वैज्ञानिक युग में उनके हाथ से हिन्दुत्व की ठेकेदारी खिसकती जा रही है।

शिरड़ी के साईं भक्तों ने जिस विकसित तन्त्र के साथ एक पाखण्ड को जनमानस में स्थापित किया है वह सनातन धर्म के लिए चुनौती कम, आत्म मंथन की कसौटी अधिक है। सनातनधर्म के तरकश में कोई तीर ऐसा नहीं है तो इस पाखण्ड को पराभूत कर सके। साईं भक्तों की तरह ईसाइयों ने भी कभी ऐसे ही एक पादरी को हिन्दुओं के रहनुमा के रूप में पेश करने का प्रयास किया था लेकिन सफल नहीं हो सके थे क्योंकि तब विकसित तन्त्र का अभाव था और लोगों की धर्म निष्ठा भी दृढ़ थी। शिरडी ट्रस्ट के साथ-साथ अनेक संत और महंत भी इस बीच पैदा हो गये हैं जो अपने को परमात्मा अथवा उसका अंश प्रचारित कर स्वयं को पुजवा रहे हैं। इन मठाधीशों के नाम पर सम्प्रदाय बनते हैं जिनके बल पर जातीय, साम्प्रदायिक, राजनैतिक ध्रुवीकरण होता है। इससे समाज और राष्ट्र विघटित और निर्बल होता है। जब विदेशी लोगों का प्रवेश विदेशी धन का निवेश इन सम्प्रदायों में होने लगता है तो स्थिति विस्फोटक बन जाती है और राष्ट्रीय अस्मिता तथा संस्कृति का क्षरण होने लगता है। भारत के पास वेद हैं, दर्शन हैं, उपनिषद् हैं, मनुस्मृति हैं जिसके बल पर राष्ट्र ही नहीं समूचे विश्व का कायाकल्प किया जा सकता है। ऋषिवर दयानन्द सरस्वती के इस विश्वास और संकल्प को अपनाने की जरूरत है। आर्य समाज ने सनातनधर्म के सामने एक सुरक्षित और सम्मानजनक विकल्प रखा था जिसे अनेक कारणों से न तो समझा गया और न ही अपनाया गया। आज हम स्वतन्त्र हैं अनेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं और चुनौतियों का सामना हमें करना पड़ रहा है जिनका समाधान वैदिक वाङ्मय की सारगर्भित ज्ञान राशि से निकल सकता है। इसी के बल पर भारत पुन: विश्व गुरु के पद पर अधिष्ठित हो सकता है। स्वामी शंकराचार्य जी और सनातनधर्म के आचार्य गण अपने पूर्वाग्रहों का परित्याग कर आर्य समाज का रास्ता अपनाएं तो भारत से साम्प्रदायिकता का उन्मूलन सम्भव है, जातिवाद के अभिशाप का उन्मूलन सम्भव है, सामाजिक विषमता और आर्थिक शोषण का उन्मूलन सम्भव है, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, मांस भक्षण का उन्मूलन सम्भव है। सम्बद्ध पक्ष क्या इस दिशा में ईमानदारी से विचार करेगा?

23 ए, अशोक मोहल्ला, नांगलोई
दिल्ली-41
मो.:- 9891110040

thearyasamaj.org

योगेश्वर श्री कृष्ण जी

–सूर्यदेव शर्मा

ओ३म्! कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा:।

एवन्त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे।। यजुर्वेद 40/2

– अलिप्त भाव से, जीवन पर्यन्त कर्म करें। यही, एक मार्ग है, अन्य नहीं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफल हेतुर्भूमा ते संगोऽस्त्व कर्माणि।। गीता 2/47

सबको कर्म करने का अधिकार है उसके फल में नहीं, कर्म फल का हेतु न बने और अकर्म में प्रीति नहीं करें।

वैदिक संस्कृति में ''कर्म करना'' मुख्य है और सृष्टि के प्रारम्भ से ही इसे प्रधानता दी गई है। वर्तमान में कर्म करने में लिप्तता अर्थात् फल प्राप्ति इच्छा, अर्थात् आर्थिक लाभ तथा अन्य लाभ प्राप्ति से, कर्म प्रधानता है। इसी दृष्टि से प्रौद्योगिकी व्यवस्था का बोलबाला है। अर्थात् शुभ लाभ के स्थान पर लाभ-शुभ प्रथमत:। भौतिकवाद से ग्रसित विश्व में, आर्थिक दृष्टिकोण सर्वोपरि हो गया है। किन्तु परिणाम कुछ और ही दिखाई दे रहे हैं। सुखी होने की दौड़ में मानव समाज दु:खी होता जा रहा है। अर्थात् ऐसा लग रहा है कि भौतिक उन्नति ही सब कुछ नहीं, इसके अतिरिक्त भी कुछ और है।

वर्तमान सृष्टि के प्रारम्भ में, परमेश्वर ने हमें चारों वेदों के रूप में प्राणिमात्र को सुखी करने व सुख प्राप्ति के लिए योग्य मार्ग में चलाकर श्रेष्ठ कर्म करते हुए, संघर्षमय जीवन का अवलम्बन होने पर भी, सुयोग्य व्यवस्थापन के साथ सारे विश्व का मार्गदर्शन दिया है।

इसी दृष्टि से यदि हम हमारे इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो भारतीय सभ्यता और संस्कृति के नभ-मण्डल में दो ज्वाज्वयमान सितारे चमकते हुए, दिखाई देते हैं जिन्हें भारतीय जन मानस में अत्यंत श्रद्धा से, यहाँ तक कि ईश्वरीय अवतार होने के रूप में मान्यता है। उनमें एक हैं – मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज तथा दूसरे योगेश्वर श्री कृष्ण जी। ये दोनों महान् आत्माएं, आदर्श विभूतियाँ, अतुलनीय हैं अपने-अपने समय के हरेक श्रेष्ठ कर्म सामाजिक व्यवस्थापन में थीं। महर्षि दयानन्द जी ने भी अपने कालजयी ग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' में इन दोनों महापुरुषों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और इन्हें ''आप्त पुरुष'' निरुपित किया है। सारे विश्व में अनेक युगों से बड़े धूमधाम से इनके जन्म दिवस के उपलक्ष में कई आयोजन कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशन कर उनके द्वारा स्थापित आदर्शों, मूल्यों को अपनाने, उन पर चलकर उन्नति की ओर अग्रसर होने का प्रयत्न करता आया है किन्तु दुर्भाग्यवश 2500 वर्ष से अवनति के काले बादल भारतीय आकाश मण्डल में छा जाने के कारण इन महान् आत्माओं के प्रति हम क्या से क्या कर रहे हैं और काल्पनिक और दूषित मनोवृत्ति के कारण, भारतीय ही नहीं विश्व मानवता को कलंकित किया है।

इस वर्ष ''जन्माष्टमी पर्व'' के उपलक्ष में, इस लेख द्वारा हमारे आदर्श योगेश्वर भगवान् श्री कृष्ण जी के विषय में, उनके जीवन काल में घटित घटनाओं एवं श्रेष्ठ कार्यों का सारांश में उल्लेख जो हमारे प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित है उनका दिग्दर्शन का अल्प प्रयास कर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशन अभिप्रेत हैं।

महामुनि महर्षि वेद व्यास, जो कि उनके समकालीन थे, द्वारा रचित महान् ग्रन्थ ''महाभारत'' के शुद्ध आधार पर श्रीकृष्ण जी महाराज के जीवन चरित्र का अवलोकन और घटित घटनाओं पर दृष्टिपात कर पाठकगण स्वयं निर्णय लें कि वास्तव में वे क्या थे?कैसे थे?भगवान योगेश्वर श्रीकृष्ण जी।

1. उनका सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ अत्याचारी कंस जो मथुरा का शासक था द्वारा अक्रूर जी के माध्यम से बुलाकर दोनों भाईयों (श्री कृष्ण जी, बलराम जी) द्वारा मल्ल युद्ध कराने व योजनाबद्ध तरीके से इन्हें मरवाने के प्रयास से प्रारम्भ होता है। जिसका परिणाम हुआ उन दोनों भाईयों द्वारा कंस के साम्राज्य का अंत और वास्तविक धर्मात्मा शासक महाराज उग्रसेन को शासनरूढ़ करना तथा तत्कालीन त्रस्त दु:खी जनता का कष्ट निवारण करना और स्वयं को राज्य पद लिप्सा से दूर रखना।

2. मगध राज्य के क्रूर, अत्याचारी, शक्तिशाली राजा जरासंघ जो अत्यंत विस्तारवादी अधिनायकवादी, जिसकी अनेक राजाओं को जीतकर उनकी सौ संख्या होने पर मरवा डालने की योजना थी। जिसने उसकी 'अस्ति'' और ''प्राप्ति'' पुत्रियों को कंस को ब्याही थी। उसका बिना किसी नरसंहार के कूटनीति से, वध कर, मगध के राज्य सिंहासन पर, उसी के पुत्र सहदेव को बैठाना।

3. द्रौपदी, जो कि राजा द्रुपद की सुयोग्य, सुशील, विदुषी कन्या थी, स्वयंवर में अर्जुन द्वारा पाण्डव को विजयी कराकर, बुद्धिमत्तापूर्वक सुनियोजित तरीके से महाराज युधिष्ठर के साथ विवाह होना और पाण्डवों से प्रगाढ़ मित्रता करना।

4. भीष्म पितामह, महर्षि व्यास, महात्मा विदुर जी के माध्यम से कुरुवंश की कटुता को दूर करने का प्रयत्न कर, तपस्विनी महारानी गांधारी द्वारा पाण्डु-पुत्रवधू द्रौपदी की मुंह दिखाई में वन का एक बड़ा भू-भाग (जहां वर्तमान में भारत की राजधानी दिल्ली बसी है।) दिलवाना और श्रेष्ठ शिल्पकारों से पाण्डवों ने 'कुरुक्षेत्र'' का निर्माण किया और उनका राज्य स्थापना कराना।

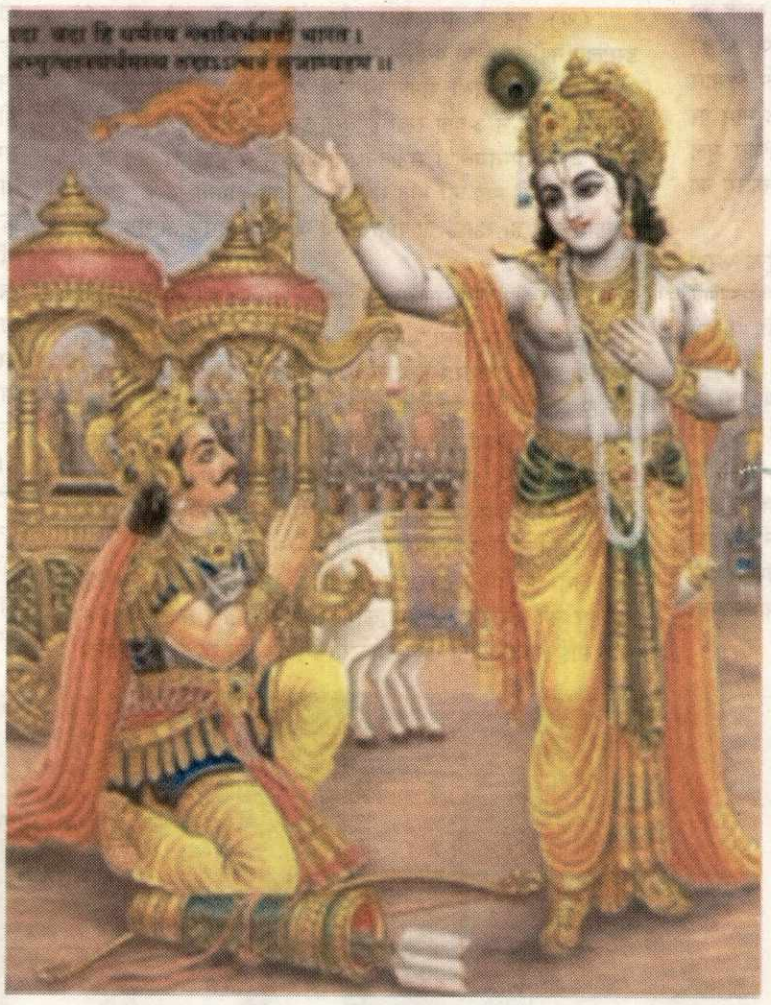

योगीराज श्रीकृष्ण के प्रति

नीतियों में रचे-पचे मन के गंभीर धीर,
देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण योगी संत हैं।
ज्ञानवती गीता को अर्जुन को सुनाय दी,
सोलह सहस्र ऋचाओं के स्वामी और कंत हैं।
न्याय के सुपक्ष की ही संस्तुति सदैव करी,
शुद्ध महाभारत में जो रहे श्रीमन्त हैं।

– कवि बाबूराम शर्मा विभाकर
52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद (उ. प्र.)
मो.:-9350451497

5. सभा में, शिशुपाल द्वारा अनेक बार कटुवचन बोलने पर भी क्षमा करते जाना और उनमें उसके द्वारा युद्ध के लिए आह्वान करने पर क्षत्रियोचित रूप से ''सुदर्शन चक्र'' द्वारा वध करना।

6. पाण्डवों के प्रथम राजसूय यज्ञ की सकुशल समाप्ति पर, ईर्ष्यालू, द्वेषी, दुर्योधन द्वारा उसके मामा शकुनि से मिलकर, दुर्नीति से महाराज युधिष्ठर को जुए में दुबारा जीतकर, पाण्डवों का राज्य हरण व दु:शासन द्वारा द्रौपदी को केश पकड़कर भरी सभा में अपमानित करते हुए लाने के समय श्री कृष्ण जी द्वारिका में जरासंध से युद्ध में रत होने के कारण नहीं आ सके थे मालूम पड़ने पर बाद में द्रौपदी जो रिश्ते में बहन लगती थी को सांत्वना देना और पाण्डवों का पूरा साथ, भविष्य में देना।

7. पाण्डवों के 12 वर्ष वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास के पश्चात् राजा विराट के साथ रिश्ता जुड़ने के साथ पाण्डवों से प्रगाढ़ संबन्ध होकर भावी योजनापूर्वक पाण्डवों का दूत बनकर दुर्योधन से यथा योग्य, व्यवहार करते हुए नीति पूर्वक आने वाले युद्ध के संकट से राष्ट्र ही नहीं सारे विश्व को बचाने का पूर्णत: प्रयत्न करना।

8. श्री कृष्ण जी बहुत ही चतुर, दूरदर्शी, सुयोग्य, राजनीतिज्ञ, वीरता के धनी होकर, नीति निपुण व्यक्तित्व के महान् ''आप्त पुरुष'' थे। उन्होंने शक्तिशाली होते हुए भी ''महाभारत'' के युद्ध को, विनाशक विभीषिका से बचाने हेतु आपसी वार्तालाप, राजनीति कूटनीतिज्ञतापूर्वक सभी प्रयत्न किये।

9. युद्ध की स्थिति में आने पर कुरुक्षेत्र में अर्जुन के युद्ध से पलायन की भावना को दूर करने के लिए जो, वेदोक्त विद्वता पूर्ण उपदेश दिये, वे तो ''श्रीमद् भगवत् गीता'' के रूप में विश्वविख्यात धरोहर के रूप में आज भी है।

10. महाभारत युद्ध की विजय पश्चात् पाण्डवों का सत्तारूढ़ होकर, महाराजा युधिष्ठिर को अश्वमेघ राजसूय यज्ञों के मार्गदर्शन व [illegible]तिविनम्रता, निराभिमानी जनता के सेवक बनकर, विश्व मानवता के प्रति उनके उद्देश्य – ''भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व को एक सूत्र में बांधना तथा प्रत्येक राष्ट्र को अपनी आन्तरिक राजनीति से स्वतंत्रतापूर्वक, निर्भयता से धर्म व सामाजिक उत्थान में पूर्णता होकर अपनी-अपनी प्रतिभा उत्तमता से प्रदर्शन करने का सुअवसर प्राप्त हो।'' पूर्ति में सफल हुए।

11. श्रीकृष्ण जी ने ऐसे महान् भारत की आधारशिला रखी जिसके शौर्य का सिक्का सारे विश्व में ऐसा जमा कि आने वाले 3000 वर्ष तक किसी भी विदेशी शासक का भारत की ओर आँख उठाकर देखने का साहस तक भी नहीं हुआ। वे वास्तव में विश्व इतिहास में बड़े-बड़े योद्धाओं, विश्व विजेताओं, दार्शनिकों, ब्रह्मज्ञानियों में एक जाज्वल्यमान नक्षत्र है जिनमें सभी सत्व गुणों, दैवी गुणों का समावेश पाया जाता है। इसी कारण भारत माता ऐसी महान् आत्माओं को जन्म देकर स्वयं को गौरवान्वित समझती है।

उनके समकालीन महापुरुषों के भी उनके प्रति बड़े उच्च विचार थे। उदाहरणार्थ राजसूय यज्ञ के समय पर भीष्म पितामह ने भी उनकी महानता का दिग्दर्शन कराया था। अर्ध्य देने हेतु सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति का चयन करने के लिए श्रीकृष्ण जी को एक मात्र योग्य निरुपित करते हुए कहा था कि –

वेद वेदांग विज्ञानं बलं चाप्यधिक तथा।

नणां लोकेहि कोऽन्योऽस्ति विशेष: केश व्राहते।।

दानं दाक्ष्यं श्रुतं शौर्य ह्री: कीर्ति बुद्धिरुत्तमा।

सन्नति: श्रीर्धृति स्तुष्टि: पुष्टिश्च नियताच्युते।।

ऋत्विग गुरुस्तथा ऽऽचार्य: स्नातका नृपति:प्रिय:।

सर्वमेत दृह्षी केश स्तस्मा दभयर्चितोऽच्युत:।।

महाभारत सभापर्व 38/19.20.22

अर्थात् – संसार में कृष्ण से अधिक कौन वेद शास्त्रों का ज्ञाता, शक्तिशाली है। श्रीकृष्ण में दानवृत्ति, व्यवस्थापन, कार्यकुशलता, शूरवीरता, लज्जा, श्री यश, उत्तम बुद्धि, विनम्रता, वैभव, धैर्य, तुष्टि (सन्तोष), यज्ञकर्ता, गुरु, आचार्य, स्नातक, राजा सदृश्य आदि अनेक गुण विद्यमान हैं।

कैसी विडम्बना है, कैसी समय की गति है, ऐसे सर्वश्रेष्ठ महापुरुष को जिन्होंने भारत को विश्व का सिरमौर बनाने में धर्म के रक्षार्थ और ''अधर्म के नाश करने के लिए'' जैसे स्वर्णिम संकल्प तथा विश्व में चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना के शिव संकल्प को साकार करने में सारे जीवन में, विषम परिस्थितियों में भी पूर्ण कार्य कुशलता के साथ स्वयं को समर्पित किया। ऐसी महान् विभूति को हमने अपने उद्देश्य पूर्ति के लिए किस स्थिति में ला खड़ा कर दिया, परिणामस्वरूप हमारी दुर्दशा होना चिंतनीय है। परमात्मा हमें सद्बुद्धि दे। इति।।

– क्यू-102 शालीमार पाम्स, इन्दौर

ब्रिटेन को ईसाई देश बताने पर बवाल ब्रिटिश लेखकों, वैज्ञानिकों व शिक्षाविदों ने जताई आपत्ति

लंदन : ब्रिटेन को 'ईसाई देश' संबोधित कर ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरन विवादों में घिर गये हैं। देश के कई जाने-माने वैज्ञानिकों, उपन्यासकारों और राजनेताओं ने उनके बयान की आलोचना की है। साथ ही आरोप लगाया है कि कैमरान ने देश में अलगाव की भावना को बढ़ावा देने का काम किया है।

लेखक सर टेरी प्रैटचेट और फिलिप पुलमैन सहित कई लेखकों, वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों समेत 50 से अधिक लोगों के ब्रिटेन को ईसाई देश के रूप में संबोधित करने के कैमरन के बयान पर आपत्ति जताते हुए एक खुला पत्र लिखा है। इसमें कहा गया है कि पीएम के इस बयान से बेवजह सांप्रदायिक बहस शुरू होगी। कैमरन का विवादित बयान ऐसे समय आया है, जब चर्च ऑफ इंग्लैंड की ओर से जारी ताजा डेटा में देश में ईसाईयों की तादाद में कमी आने की बात सामने आई है। संडे प्रेयर में भी कम लोग ही चर्च जाते हैं। पिछले 10 वर्षों में यूके में ईसाईयों की आबादी 4.1 मिलियन घटी है। गौर करने वाली बात यह है कि देश के 25 साल से कम उम्र के करीब 32 फीसदी युवाओं में ईसाई धर्म को लेकर आस्था तेजी से कम हुई है। दरअसल धर्म में इनकी आस्था ही नहीं रह गई है।

'डेली टेलीग्राफ' को लिखे पत्र में हस्ताक्षर करने वाले ब्रिटिश मानवतावादी संघ के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर जिम अल-खलीली ने कहा, 'ब्रिटेन को ईसाई देश के रूप में संबोधित करने वाले पीएम के बयान पर हमें आपत्ति है। इससे देश के समाज और राजनीति मे नकारात्मक परिणाम पैदा होते हैं। संविधान के मुताबिक देश में एक स्थापित चर्च है लेकिन ब्रिटेन एक ईसाई देश नहीं है। ब्रिटेन में बहुलवादी समाज है, जिसमें ज्यादातर गैर धार्मिक हैं।' ऐसे दावे समाज में अलगाव को बढ़ावा देते हैं। जबकि ब्रिटेन के ज्यादातर लोग चाहते हैं कि उनके द्वारा निर्वाचित सरकार धर्म या धार्मिक पहचानों को प्राथमिकता न दे। हाल में किए गए यूगोव सर्वे के मुताबिक सवाल पूछे गये लोगों में से 65 फीसदी ब्रिटिश नागरिकों ने खुद को धार्मिक नहीं बताया।

ब्रिटिश प्रधानमंत्री कैमरन ने यह कहा था

कैमरन ने कहा था कि उनका मानना है कि ईसाई धर्म ब्रिटेन की आध्यात्मिक, प्राकृतिक और नैतिक अवस्था को बदल सकता है। ब्रिटेन को एक ईसाई देश के रूप में अपनी स्थिति के बारे में और अधिक आश्वस्त होना चाहिए। ईसाईयों को अपने मूल्यों की रक्षा के लिए भी आश्वस्त होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरे धर्मों को कम करके आंका जाए। तीन साल पहले भी पीएम ने कहा था कि यूके एक ईसाई देश हैं और यह कहने में कोई हिचक नहीं होना चाहिए।

thearyasamaj.org

समस्त जिला आर्योपप्रतिनिधि सभा के सम्मानित पदाधिकारियों से विनम्र निवेदन

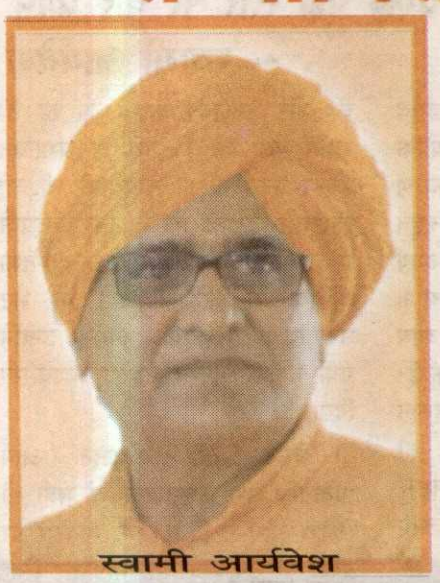
स्वामी आर्यवेश

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने वेद आधारित विचारों, समाज के सर्वांगीण हित तथा मानव मात्र के कल्याण के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी और देश में फैले आडम्बर, अन्धविश्वास, पाखण्ड और कुरीतियों से लड़ना मुख्य उद्देश्य बनाया था और वे इसमें सफल भी हुए थे। लेकिन आज चारों तरफ जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण और नारी उत्पीड़न का बोलबाला है और आर्य समाज चुप्पी साधे बैठा है। सारे देश की नजरें आज आर्य समाज के ऊपर टिकी हैं। क्योंकि आर्य समाज के ही पास वह वैचारिक और आध्यात्मिक दृष्टि है जो उपर्युक्त महारोगों का उन्मूलन कर सकती है। आपस के विवाद, लड़ाई, झगड़े, मुकदमेंबाजी और पद लोलुपता के कारण आर्य समाज की यह स्थिति बन गई है।

सार्वदेशिक सभा का प्रधान बनाकर जो गुरुतर दायित्व आप सबने मुझे सौंपा है तो मेरा यह दायित्व बनता है कि मैं भरसक प्रयास करके आप सबके सहयोग से आर्य समाज को उसी गौरव पूर्ण स्थिति में पहुँचाऊँ जिसके लिए आर्य समाज जाना जाता रहा है। मेरा आप सभी से विनम्र निवेदन तथा आह्वान है कि हम सभी को एक दूसरे के प्रति सम्मान, सद्भाव और विश्वास रखते हुए महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाना है। किसी भी प्रकार के विवाद से परे होकर हम सब आर्य समाज को गति प्रदान करने में जुट जायें और इस कार्य में जिला आर्योपप्रतिनिधि सभाओं के अधिकारियों को बहुत जिम्मेदारी के साथ आर्य समाज को सक्रिय करने की आवश्यकता है। अपने-अपने जिलों की आर्य समाजों को किस प्रकार क्रियाशील करना है उनका किस प्रकार मार्ग दर्शन करना है यह आप सब पदाधिकारियों का मुख्य कार्य है। आप सब अपने जिले की समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों से पत्र-व्यवहार करें, बैठकें करें, उनको मार्गदर्शन दे और सम्पन्न होने वाले कार्यक्रमों की देख-रेख भी करें। यदि ऐसा होता है तो कोई कारण नहीं है कि आर्य समाज में गति पैदा न हो। आवश्यकता है ऋषि ऋण से उऋण होने के लिए कठिन परिश्रम की तथा योजनानुसार कार्य करने की। सार्वदेशिक सभा से आप सबका सम्पर्क निरन्तर बना रहना चाहिए और प्राप्त निर्देशों के अनुरूप आगे की कार्यवाही करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। प्रत्येक जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के पदाधिकारियों से मेरा विनम्र निवेदन है कि वे अब सक्रिय हों और आर्य समाजों में आकर्षक कार्यक्रमों के द्वारा आमजनों को जोड़ने का प्रयास करें। आमजनों का विश्वास प्राप्त करना हमारी पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। श्रावणी का पर्व मनाने की आप सबने पूर्ण तैयारी कर रखी है और इसी महापर्व से हम सबको अपने अभियान को प्रारम्भ कर देना चाहिए। यह एक ऐसा सुअवसर हमें प्राप्त हुआ है कि हम अपने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा आमजनों को प्रभावित कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहला कार्य जो हमें करना है वह है अपनी आर्य समाज की चारदीवारी से बाहर निकलना। हम आर्य समाज में तो यज्ञ करें ही लेकिन इस पर्व पर पार्कों में, बाजारों में, स्कूलों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर विशेष यज्ञों का आयोजन करें तथा आमजनों को उसमें आहुतियां डालने के लिए प्रेरित करें। क्षेत्र के विशिष्टजनों को सरकारी अधिकारियों को भी विशेष रूप से आमन्त्रित करें और उनकों वहां पर वैदिक साहित्य भी भेंट करें। इससे लोगों को हमारी मान्यताओं का पता चलेगा। हमारा प्रयास होना चाहिए कि हम वैदिक प्रचार, संस्कार, स्वाध्याय तथा योग आदि पर अपना ध्यान केन्द्रित करें।

आर्य समाजों में योग आदि की कक्षायें लगाकर, प्रशिक्षण शिविर लगाकर हम अपने आस-पड़ोस के युवाओं को आकर्षित कर सकते हैं और उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं। क्योंकि युवा ही किसी समाज या राष्ट्र की शक्ति होते हैं आर्य समाज में युवाओं की कमी को दूर करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम अपने कार्यक्रमों के द्वारा उन्हें आकर्षित करें और उन्हें जागरूक करें तथा उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं, शिविरों के माध्यम से आगे लायें तथा योग्य युवाओं को अधिक से अधिक आर्य समाज का सदस्य बनायें। उनके चारित्रिक विकास का भी पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए। समग्र समाज में सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए युवाओं पर विशेष ध्यान देना होगा और यह एक बुनियादी आवश्यकता है।

आर्य समाज को सक्रिय करने के लिए विभिन्न स्थानों पर जहां आर्य समाज नहीं है या दूर है वहां नवीन आर्य समाज की स्थापना कर, पाखण्ड, गुरुडम, अन्धविश्वास के विरुद्ध मोर्चा खोलना भी हमारे प्राथमिक कार्य में होना चाहिए। ग्रामीण अंचल और दूर दराज के क्षेत्रों में वेद प्रचार का सघन कार्यक्रम बनाकर चलना होगा तथा सुन्दर और सस्ते वैदिक ट्रैक्ट वितरित कर आमजनों को अपनी मान्यताओं से परिचित कराना होगा तथा भारी संख्या में लोगों को आर्य समाज का सदस्य बनाने पर विशेष ध्यान देना होगा।

देखा गया है कि आर्य समाजों में महिलाओं की संख्या नगण्य सी होती है हमें इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नारी जाति को ऊपर उठाने के लिए कठिन संघर्ष किया था। लेकिन आज हमारी मातायें, बहनें सबसे ज्यादा पाखण्ड व शोषण का शिकार हो रही हैं। हमें आर्य समाजों में महिलाओं को विशेष प्रयास करके लाना होगा। हम जहाँ अपने परिवार की माताओं, बहनों को आर्य समाज में आने के लिए प्रेरित करें वहीं पास-पड़ोस की महिलाओं को भी आर्य समाज में लाने का प्रयास करें। ऐसे कार्यक्रम आर्य समाज में होने चाहिए जिससे महिलायें आकर्षित हों और आर्य समाज की विचारधारा से परिचित हों।

एक सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य जो हम सबको अवश्य ही करना चाहिए वह है एक ऐसी छवि बनाना जिससे लोग कहें कि हाँ यह आर्य समाजी हैं हमें अपने कार्यों से चरित्र से व्यवहार से अपने पास पड़ोस के लोगों पर एक विशेष छाप छोड़नी है। और इसके लिए अपने पास पड़ोस और गली-मोहल्ले के लोगों के घरों में दुख तथा सुख में बराबर का भागीदार बनना होगा उनकी सहायता करनी होगी। जिस मोहल्ले या गांव में आर्य समाज स्थापित है, उस मोहल्ले के परिवारों के पारिवारिक कार्यक्रमों में आर्य समाज के सदस्य के रूप में आप अपनी उपस्थिति दर्ज करायें तथा यथाशक्ति सहयोग प्रदान करें। लोगों से मेल मिलाप और सहयोगी प्रवृत्ति के द्वारा हम अपने साथ लोगों को जोड़ पायेंगे। जब लोग जुड़ेंगे तभी तो हम अपनी बात उन तक पहुंचा पायेंगे। इस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आर्य समाज में महिला चरित्र निर्माण शिविर लगाकर पास पड़ोस की महिलाओं को हम आकर्षित कर सकते हैं। प्रतियोगिता तथा गोष्ठियां करके विदुशी महिलाओं को आमन्त्रित करके उन पर अपने विचारों का प्रभाव डाला जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि महिलाओं को विशेष रूप से आर्य समाज में लाने का प्रयास करना होगा तथा उन्हें आर्य समाज का सदस्य भी बनाना चाहिए। यह ध्यान रखना होगा कि एक महिला को आर्य बनाने का मतलब है एक परिवार को आर्य बनाना। आर्य समाज से जुड़ी हुई माताओं बहनों से मैं आशा करता हूँ कि वे एक जागरूक प्रहरी की भूमिका निभाते हुए सक्रिय होकर अन्य दु:खी महिलाओं की पीड़ा को समझें और उनकी सहायता करें तो एक बहुत बड़ी सामाजिक क्रान्ति का सूत्रपात सम्भव है। महिलाओं को प्रशिक्षित करके इस अभियान के लिए तैयार किया जाना चाहिए। इन सब कार्यक्रमों को अपना कर हम अपना बहुआयामी स्वरूप जनता के सामने ला सकते हैं इससे न केवल आर्य समाज को पहचान मिलेगी अपितु इससे सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में हम अग्रणी बनकर कार्य कर सकेंगे तथा निश्चित रूप से हम मानवता के हित में समाज और राष्ट्र के हित में एक ठोस कदम उठा पायेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरी भावनाओं को ध्यान में रखकर आप सभी पूर्ण निष्ठा और परिश्रम से आर्य समाज के कार्य में प्राण-पण से जुटेंगे और आर्य समाज को गति प्रदान करने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। अपने समस्त कार्यक्रमों की रिपोर्ट विस्तार से आप हमें भेजें चित्र भी साथ में भेजें जिसे हम वैदिक सार्वदेशिक में प्रमुखता से प्रकाशित करेंगे। वैदिक सार्वदेशिक में आपका समाचार प्रकाशित होने पर जहां आपके कार्य की सराहना होगी वहीं अन्य लोगों को इससे प्रेरणा भी प्राप्त होगी। — स्वामी आर्यवेश, प्रधान सार्वदेशिक सभा

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद

– डॉ. उमाशंकर नगायच

स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद के विविध आयाम-स्वदेशी, स्वभाषा (हिन्दी), स्वधर्म (वेदवाद), स्वराज्य तथा चक्रवर्ती आर्य राज्य के विस्तृत विवेचन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण काल के समाजसेवी तथा धर्माचार्य जहाँ लोकेषणा और आत्मचिंतन तक ही सीमित थे, वहीं दयानन्द ने मातृभूमि की दुर्दशा से द्रवित होकर उसके कल्याण और मुक्ति हेतु सार्थक चिन्तन प्रस्तुत किया है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को जागृत करने के लिए अपने ब्रह्मसुख का परित्याग कर दिया। उनके लिए राष्ट्रमुक्ति ही परम धर्म था।

भारतीय पुनर्जागरण काल के समाज सुधारकों एवं महापुरुषों में महर्षि दयानन्द का अप्रतिम स्थान है। महर्षि दयानन्द वर्तमान युग में भारत के लिए स्वराज्य, स्व-संस्कृति, स्वदेशी एवं स्वभाषा के प्रथम स्वप्नदृष्टा थे। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा स्वराज्य के अभियान में वे दादाभाई नौरोजी, लोकमान्य तिलक, विवेकानन्द, मदनमोहन मालवीय तथा महात्मा गांधी आदि नेताओं के अग्रणी समाज सुधारक एवं जन नेता थे। महर्षि दयानन्द स्वराज्य के सर्वप्रथम उद्घोषक एवं संदेश वाहक थे। अत: स्वदेशी, स्वराज्य, स्व-संस्कृति एवं स्वराष्ट्रगौरव सम्बन्धी उनके अग्रगामी चिन्तन एवं भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तथा स्वराज्य के अभियान में उनके योगदान को ध्यान में रखते हुए उन्हें राष्ट्रपितामह कहा जा सकता है। महर्षि दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों के सम्बन्ध में डॉ. सत्यदेव विद्यालंकार लिखते हैं "ऋषि दयानन्द इस देश के निवासियों में इसी राष्ट्रीय भावना को और इसी राष्ट्रवाद को जगाना चाहते थे। उनके आराध्य देव ईश्वर की राजा, महाराज और महाराजाधिराज तथा सम्राट आदि नामों से आराधना करने की सुन्दर एवं उत्कृष्ट परम्परा के सूत्रपात करने से भी उनकी राष्ट्रीय भावना का प्रत्यक्ष परिचय मिलता है।"

अंग्रेजों की दासता में जकड़े हुए देश में राष्ट्रीय स्वाभिमान तथा स्वराज्य की भावना से युक्त राष्ट्रवादी विचारों की शुरुआत करने तथा अपने कृत्यों एवं उपदेश से निरन्तर राष्ट्रवाद को पोषित करने वाले महर्षि दयानन्द को ही आधुनिक युग में भारतीय राष्ट्रवादी चिन्तन के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वान् मैक्समूलर ने कहा है "दयानन्द की धार्मिक शिक्षाओं में भी सशक्त राष्ट्रीय अनुभूति है।" इस विषय में डॉ. लालसाहब सिंह लिखते हैं "स्वामी दयानन्द राष्ट्रवाद विषयक सुदृढ़, स्वसंस्कृति, स्वदेश, स्वराज्य एवं स्वभाषा के उपासक थे। उन्होंने भारत के गौरवशाली अतीत के पुनराख्यान द्वारा भारतीयों के लुप्तप्राय आत्मविश्वास, आत्मावलम्बन, आत्म गौरव, आत्मनिर्भरता एवं अस्मिता को उद्बुद्ध कर वेदों तथा स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व एवं न्याय का संदेश दिया है। दयानन्द समग्र रूप में भारतीय राष्ट्रवाद के जनक हैं।" महर्षि दयानन्द के राष्ट्रवाद के प्रमुख सोपान हैं - स्वदेश, स्वराज्य, स्वभाषा एवं स्वधर्म।

स्वामी दयानन्द के हृदय में स्वदेश अर्थात् अपनी मातृभूमि आर्यावर्त देश का सर्वोपरि सम्मान था। सत्यार्थप्रकाश ग्यारहवें समुल्लास में उन्होंने अपने देश प्रेम को प्रकट करते हुए लिखा है यह आर्यावर्त देश ऐसा है, जिसके सदृश भूगोल में दूसरा देश नहीं है। इसीलिए इस भूमि का नाम सुवर्णभूमि है, क्योंकि यह सुवर्णादि रत्नों को उत्पन्न करती है। जितने भूगोल में देश हैं, वे सब इसी देश की प्रशंसा करते और आशा रखते हैं कि पारसमणि पत्थर सुना जाता है, वह बात तो झूठी है, परन्तु आर्यावर्त देश ही सच्चा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूप दरिद्र विदेशी छूने के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। महर्षि ने स्वदेश भक्ति न होने के कारण ब्राह्मसमाजियों एवं प्रार्थना समाजियों के धिक्कारा है। प्रार्थना समाजियों और ब्राह्मसमाजियों की इस विशय में तीखी आलोचना करते हुए वे अत्यंत वेदना और व्यथा के साथ लिखते हैं कि इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। भला जब आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुए हैं, अपने माता-पिता व पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना.... एतद्देशस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करना, इंग्लिश भाषा पढ़के पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना, मनुष्यों का स्थिर और बुद्धिकारक काम क्यों कर हो सकता है?स्वदेश, स्वभाषा, स्वधर्म और अपने पूर्वजों के प्रति प्रेम, गौरव एवं स्वाभिमान का भाव महर्षि के विचारों में पदे-पदे छलक रहा है। महर्षि दयानन्द के स्वदेशी सम्बन्धी विचारों को स्वतंत्रता संग्राम के स्वदेशी आन्दोलन का आधार सूत्र बताते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने लिखा ... "स्वामी दयानन्द ने अपनी आश्चर्यजनक भविष्यदर्शी दृष्टि द्वारा हस्तनिर्मित वस्त्रों एवं अन्य स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का जो विचार प्रस्तुत किया, उसे ही पचास वर्ष के पश्चात् महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम का एक मुख्य मुद्दा बनाया।"

'स्वराज्य के विषय में महर्षि दयानन्द के विचार अत्यंत क्रांतिकारी थे। उन्होंने ही आर्यावर्त आर्यों के लिए हैं' का उद्घोष किया जो कालान्तर में 'भारत भारतीयों के लिए है,' के रूप में स्वतंत्रता संग्राम का ध्येयसूत्र बना। महर्षि ने अपने ग्रंथों एवं प्रवचनों में स्वराज्य के संबन्ध में अत्यंत स्पष्ट विचार व्यक्त किये हैं। सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास में लिखे गये ये शब्द भारत की स्वाधीनता के इतिहास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं यथा अब अभाग्योदय से और आर्यों के आलस्य, प्रमाद, परस्पर के विरोध से अन्य देशों के राज्य करने की तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी आर्यों का अखण्ड, स्वतंत्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस समय नहीं है। जो कुछ है सो भी विदेशियों से पादाक्रान्त हो रहा है। कुछ थोड़े राजा स्वतंत्र हैं। दुर्दिन जब आता है, तब देशवासियों को अनेक प्रकार का दु:ख भोगना पड़ता है। कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है। अथवा मत-मतान्तर के आग्रह रहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर पिता-माता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है। परन्तु भिन्न-भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अलग-अलग व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है। बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है। इसलिए जो कुछ वेदादि शास्त्रों में व्यवस्था के इतिहास लिखे हैं, उसी को मान्य करना भद्रपुरुषों का काम है। इस प्रकार दयानन्द के समूचे राजनीतिक दर्शन का आदर्श 'स्वराज्य' है तथा राज्य, सभा, अमात्य आदि राज्य के सभी अंग उसके साधन हैं।

महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रंथ 'आर्याभिविनय' में ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपने देश की स्वतंत्रता और स्वराज्य की मांग की है। उन्होंने कहा "अन्य देशीय राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों।" तथा .... हे कृपासिन्धो

अगले पृष्ठ पर जारी है

thearyasamaj.org

पिछले पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद

भगवान्! हम पर सहाय करो, जिससे सुनीतियुक्त होके हमारा स्वराज्य अत्यंत बढ़े। इन प्रार्थनाओं में महर्षि का सन्देश प्रेम तथा स्वराज्य के लिए उनकी उत्कृष्ट अभिलाषा स्पष्ट दिखाई देती है। महर्षि दयानन्द ने अपने राष्ट्रवादी विचारों के तारतम्य में स्वराज्य से बहुत आगे बढ़कर आर्यों के सर्वतंत्र स्वतंत्र चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना का भी विचार प्रस्तुत किया है।

महर्षि ने आर्य भाषा (हिन्दी भाषा) को देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए भी बहुत प्रयत्न किये। उन्होंने अपने अधिकांश ग्रंथ हिन्दी भाषा में लिखे और देशभर में अपने उपदेश, प्रवचन हिन्दी भाषा में ही दिये। स्वधर्म के रूप में महर्षि दयानन्द ने विशुद्धवैदिक धर्म की अवधारणा को पुनरुज्जीवित कर समाज में धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्डों का खण्डन किया और सच्चे धर्म का स्वरूप सभी के सामने उपस्थित किया।

स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों की व्याख्या करते हुए डॉ. लालसाहब सिंह लिखते हैं स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद के विविध आयाम-स्वदेशी, स्वभाषा (हिन्दी), स्वधर्म (वेदवाद), स्वराज्य तथा चक्रवर्ती आर्य राज्य के विस्तृत विवेचन के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय पुनर्जागरण काल के समाजसेवी तथा धर्माचार्य जहाँ लोकेषणा और आत्मचिंतन तक ही सीमित थे, वहीं दयानन्द ने मातृभूमि की दुर्दशा से द्रवित होकर उसके कल्याण और मुक्ति हेतु सार्थक चिन्तन प्रस्तुत किया है। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को जागृत करने के लिए अपने ब्रह्मसुख का परित्याग कर दिया। उनके लिए राष्ट्रमुक्ति ही परम धर्म था। एक संन्यासी द्वारा इस प्रकार का चिन्तन अभूतपूर्व था। उनके राष्ट्रवादी चिन्तन की सर्वप्रमुख विशेषता भारतीयता थी। उनके राष्ट्रवादी चिन्तन से प्रभावित होकर मुंशी प्रेमचन्द ने कहा था कि दयानन्द भारतीयता का अवमूल्यन नहीं करना चाहते थे। भारत का प्रगतिवाद एवं पश्चिम के डिजाइन का भवन वे सहन नहीं कर सकते थे। दयानन्द के लिए आर्य जाति चुनी हुई जाति, भारत चुना हुआ देश और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक थी। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि दयानन्द विशुद्ध भारतीय राष्ट्रवाद के जनक थे।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाषा और स्वराज्य की अवधारणाएँ प्रस्तुत कर भारतीयों में स्वाभिमान की भावना का प्रबलता से संचार किया। उन्होंने भारत के गौरवशाली अतीत की अत्यन्त प्रबल और प्रेरणास्पद व्याख्या प्रस्तुत कर भारतीयों में अभूतपूर्व आत्मसम्मान एवं राष्ट्रगौरव की भावना उत्पन्न कर दी।

आर्य समाज हरिद्वार में सम्पन्न हुई उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकर्ताओं की बैठक

पशुबलि, कन्या भ्रूण हत्या तथा नशाखोरी के विरुद्ध युद्ध स्तर पर करें कार्य

– स्वामी आर्यवेश

सार्वदेशिक सभा के नव-निर्वाचित प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने उत्तराखण्ड में आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी लेने के उद्देश्य से हरिद्वार का एक दिन का आकस्मिक दौरा किया। इस अवसर पर आर्य समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की बैठक आर्य समाज हरिद्वार में रखी गई। बैठक में हरिद्वार, देहरादून टिहरी गढ़वाल तथा अन्य क्षेत्रों के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया तथा उत्तराखण्ड में आर्य समाज की गतिविधियों की जानकारी दी तथा स्वामी आर्यवेश जी से मार्ग दर्शन प्राप्त किया। इस अवसर पर स्वामी जी ने उत्तराखण्ड में आर्य समाज को कैसे गति दी जा सकती है तथा प्रचार-प्रसार का कार्य कैसे युद्ध स्तर पर किया जा सकता है की जानकारी देते हुए अपने-अपने क्षेत्र में नशाबन्दी, पशुबलि तथा कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन चलाने की बात कही। स्वामी जी ने आर्य समाज में चल रहे विखराव की विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि आप सब अपने-अपने प्रयासों से इस बिखराव को दूर करने का प्रयास करें। क्योंकि आर्य समाज में इस फूट के कारण गुटबन्दी के कारण समाज का बहुत अहित हो रहा है तथा जो धन आर्य समाज को उन्नत करने में लगना चाहिए था वह कोर्ट-कचहरी में व्यय हो रहा है जो अत्यन्त चिन्ता जनक है। स्वामी जी ने कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे सार्वदेशिक सभा को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए भरपूर आर्थिक सहयोग करें। उन्होंने बताया कि सार्वदेशिक सभा ने वेदों के प्रकाशन का कार्य प्रारम्भ कर दिया है आप अपने प्रभाव का इस्तेमाल करते हुए आर्य समाजों में उत्तराखण्ड के प्रत्येक परिवार में वेदों को पहुँचाने का कार्य करें क्योंकि सारी संस्कृति और धार्मिक मान्यताओं का आधार वेद है अत: वेदों का पठन-पाठन और मनन-चिन्तन प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। बहुत कम मूल्य पर मात्र 2100/- रुपये में वेद सेट उपलब्ध कराये जा रहे हैं। स्वामी जी के विचारों से प्रभावित होकर कार्यकर्ताओं ने स्वामी जी को विश्वास दिलाया कि वे उनके सुझावों पर अभी से अमल प्रारम्भ कर देंगे तथा अधिक से अधिक वेदों के सेट उत्तराखण्ड में मंगवायें जायेंगे। उन्होंने पर्याप्त धनराशि देने का भी आश्वासन दिया।

बैठक का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के मंत्री श्री दिनेश आर्य ने किया। इस अवसर पर प्रदेश के उपाध्यक्ष डॉ. मानपाल सिंह जिला सभा के प्रधान श्री प्रकाश चन्द्र त्यागी, निवर्तमान प्रधान मा. सुमन्त सिंह, डॉ. जसवीर मलिक, डॉ. संजीव कुमार आदि ने भी अपने विचार रखे। बैठक की सम्पूर्ण व्यवस्था आर्य समाज, हरिद्वार के प्रबन्धक डॉ. वीरेन्द्र पवार ने की।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि "हाँ" तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

स्वामी अग्निवेश जी को आतंकवादी कहने की निंदा

उपखंड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

शिवगंज, राजस्थान : आर्य समाज के पदाधिकारियों व सदस्यों ने कार्यवाहक उपखंड, अधिकारी हेताराम चौहान को राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के नाम का ज्ञापन सौंपकर बताया कि विगत दिनों धर्मगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती द्वारा सांई बाबा को लेकर की गई धार्मिक टिप्पणियों से उठे विवाद के मामले में आध्यात्मिक समाज सेवक स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहे जाने की कड़े शब्दों में भर्त्सना एवं निन्दा की तथा शंकराचार्य द्वारा किया गया यह व्यवहार निंदनीय है।

राष्ट्रपति को भेजे ज्ञापन में आर्य समाज के लोगों ने धर्मगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द के पास स्वामी अग्निवेश के खिलाफ कोई भी सबूत है तो उन्हें तुरन्त ही किसी भी पुलिस थाने में शिकायत दर्ज करानी चाहिए। अन्यथा उन्हें शीघ्रातिशीघ्र मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक तौर पर स्वामी अग्निवेश के खिलाफ की गई टिप्पणी को लेकर माफी मांगनी चाहिए अगर शंकराचार्य ऐसा नहीं करते हैं तो इस घटना को ब्लैकमेलिंग की दृष्टि से देखा जायेगा।

विशेषकर तब जब वह अंधविश्वास को लेकर स्वामी अग्निवेश द्वारा उठाये गये प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ रहे थे।

ज्ञापन में आर्य समाज के लोगों ने बताया कि स्वामी अग्निवेश एक राष्ट्रभक्त, समाजसेवी हैं जो हमेशा अंधविश्वास और पाखंड फैलाने वालों के विरुद्ध खड़े होकर आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों को आगे बढ़ाने में सक्रिय रहते हैं तथा मानव समाज में फैली कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करते रहते है। ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध धर्मगुरु शंकराचार्य जैसे व्यक्ति द्वारा घिनौना आरोप लगाना अशोभनीय है जिसकी आर्य समाज के लोग कड़े शब्दों में निन्दा करते है।

ज्ञापन देते समय ये थे मौजूद

आर्य समाज शिवगंज प्रधान सेवाराम, छावनी प्रधान नरेश कुमावत, खाड़िया मंत्री कल्पेश कुमार, आर्यवीर दल अध्यक्ष पुरुषोत्तम सुथार, पुरोहित सचिन शास्त्री, चेतनानन्द व्यायाम शाखा संचालक जयपालसिंह, भीम व्यायाम शाखा संचालक संजय मेघवाल, जीवाराम आर्य, हरदेव आर्य, लक्ष्मण मीणा, महेन्द्र कुमार, मनीष कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

ग्राम दमदमा जिला–गुड़गांव में किया गया स्वामी आर्यवेश जी का अभिनन्दन

आर्य समाज एवं दलित जन चेतना संगठन के संयुक्त तत्वावधान में श्रावणी तथा रक्षा बन्धन पर्व के अवसर पर सायं 5 बजे से 7 बजे तक ग्राम दमदमा में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष रूप से बाल्मीकि समाज के युवाओं तथा महिलाओं ने बड़ी भारी संख्या में भाग लिया। इस अवसर पर आर्य जगत के तेजस्वी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संयोजन श्री हंसराज आर्य एवं श्री अश्वनी पंडित ने अत्यन्त कुशलता पूर्वक किया। इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह, स्वामी विजयवेश, स्वामी आर्यवेश तथा स्वामी अग्निवेश जी ने उपस्थित जन समूह को सम्बोधित किया।

इस अवसर पर प्रो. श्योताज सिंह जी ने अपने सम्बोधन में विशेष रूप से दलित समाज से आग्रह किया कि वे शराब आदि नशे तथा मांसाहार से अपने को दूर रखें तो उनका कायाकल्प हो सकता है। इन दो प्रमुख बुराइयों से बचने वाला व्यक्ति जो मेहनतकश है परिश्रमी है वो स्वयं ही आर्य बन जाता है। उन्होंने कहा कि दलित समाज को आर्य समाज की धारा में लाना समय की आवश्यकता है।

समारोह में स्वामी विजयवेश जी ने दलित समाज के लोगों को आश्वस्त करते हुए कहा कि हमारा आश्रम यहीं निकट ही है आपकी किसी भी प्रकार की समस्या हो उसके समाधान के लिए आप नि:संकोच आइये! हमारे आश्रम के दरवाजे 24 घंटे खुले रहते हैं। उन्होंने कहा कि आज का दिन वेदों के स्वाध्याय का दिन है। उन्होंने श्रावणी पर्व की महत्ता को दर्शाते हुए कहा कि चौमासे के चार महीनों में हमारे साधु सन्त पहाड़ों आदि से नीचे उतर कर गावों में निवास करते थे किसानों के पास भी इन महीनों में कोई कार्य नहीं होता है अत: वे विद्वान, संन्यासी अपने गाँवों में स्थित आश्रमों में रहकर वेद का पठन-पाठन करते थे वेदों की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार करते थे वेदोपदेश करते थे और चारों तरफ ज्ञान की गंगा बहाते थे। जो लोग अन्य महीनों में व्यस्तता के कारण स्वाध्याय नहीं कर पाते थे उनके लिए वेदोपदेश को सुनना, पठन-पाठन करना एक सौभाग्य की तरह होता था और वे इस ज्ञान गंगा में स्नान करके अपने जीवन को सफल बनाते थे। स्वामी जी ने कहा कि आज यह परम्परायें समाप्त हो गई हैं लेकिन आर्य समाज अभी इन्हें निभा रहा है। इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रावणी पर्व के महत्त्व पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में इस पर्व का अत्यन्त महत्त्व है यह स्वाध्याय पर्व कहा जाता है। श्रावणी से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक वेद प्रचार सप्ताह के रूप में सारे देश की आर्य समाजें वेद प्रचार के कार्यक्रम करती हैं और लोग ज्ञान लाभ उठाते हैं। आज के इस पावन पर्व पर आप सब लोग स्वाध्याय का व्रत लें तथा आर्य समाजों में जाकर वेद उपनिषदों की कथायें सुनें ऐसा करने से आपका जीवन बदल जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि आज धर्म से लोग दूर हो रहे हैं और धन की लालसा बढ़ रही है तथा गलत तरीकों से पैसा कमाने की होड़ लगी है। पैसे की लालसा ने सारे ढांचे को कमजोर कर दिया है। स्वामी जी ने कहा कि आज रक्षा बन्धन है यह भाई बहन के पवित्र प्रेम का त्यौहार है। बहनें अपने भाई को राखी बांधती हैं और सुरक्षा का आश्वासन मांगती हैं। भाई बहन के प्रगाढ़ प्रेम का यह पर्व है। लेकिन धन ने आज इस प्रेम में दरार डाल दी है। बहुत जगहों पर इसके कारण झगड़े हो रहे हैं मुकदमें डाले जा रहे हैं भौतिक आंधी के पुराने समस्त मूल्य नष्ट होते जा रहे हैं। आज आवश्यकता वेद शास्त्र तथा आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय की है उससे प्राप्त ज्ञान को प्राप्त कर जात-पात, गरीब-अमीर, काले-गोरे के आधार पर जो विघटन फैला हुआ है उसे दूर करें, मेरा आप सब दलित समाज के लोगों से आग्रह है कि आप सब आर्य समाज से जुड़ें अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दें तथा जात-पात, साम्प्रदायिकता जैसी बुराइयों को छोड़ें। आपको अपने दैनिक कार्यों, आचार व्यवहार में परिवर्तन लाना होगा, बुराइयों से बचना होगा और अच्छाई को अपनाना होगा ऐसा करने से आप समाज की मुख्य धारा से जुड़ सकते हैं।

इस अवसर पर क्रांतिकारी संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने अपने उद्बोधन में धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड पर अपने तार्किक व्याख्यान से उपस्थित जन समूह को मन्त्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने कहा कि शंकराचार्य स्वरूपानन्द से मैंने प्रश्न पूछा कि पत्थर की बनी मूर्तियों की पूजा करना कैसे उचित है उनमें प्राण प्रतिष्ठा कैसे की जा सकती है। जब शंकराचार्य जी के द्वारा मूर्ति में प्राण प्रतिष्ठा की जाती है तो मूर्ति को बोलना चाहिए चलना चाहिए, खाना चाहिए लेकिन मूर्ति तो ऐसा कुछ नहीं करती। स्वामी जी ने कहा कि मैंने उनसे पूछा कि वे बतायें वेद में कौन से मन्त्र हैं जिनसे प्राण-प्रतिष्ठा की जा सकती है। लेकिन उनके पास इसका कोई उत्तर नहीं था। बौखलाहट में उन्होंने मेरे ऊपर आरोप लगाया कि मैं आतंकवादी हूँ। स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि मूर्ति पूजा और गुरुडम के नाम पर जो पाखण्ड और ठगी चल रही है इसे समझने की जरूरत है। भगवान की बनाई मूर्तियाँ तो यह छोटे-छोटे बच्चे और हम सब हैं। वो मूर्तियाँ तो पत्थर को तराश कर बनाई जाती हैं जो खाती-पीती नहीं हैं आप लोगों को उसी में उलझाये रखना, मनोकामना पूर्ति का आश्वासन देना यह सब वेद विरुद्ध है। वेदों का तथा उनके अनुयायियों का कार्य है वेद विरुद्ध ऐसे पाखण्डों से आपको बचाना। स्वामी जी ने कहा वेद नाम ज्ञान का है और उस ज्ञान से स्त्रियों को शूद्रों को अलग रखना यह कहाँ का न्याय है ऐसे जगद्गुरुओं की मानसिकता पर तरस आता है कि वे किस प्रकार दुनिया की आधी आबादी को ज्ञान से वंचित रखना चाहते हैं। ऐसे लोगों को नकार देने की आवश्यकता है। मानव मात्र को वेद पढ़ने-पढ़ाने, यज्ञ करने कराने का पूरा अधिकार है। स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द की विचारधारा से व आर्य समाज की विचारधारा से जुड़ने की आवश्यकता है तथा साम्प्रदायिकता जातिवाद तथा नशाखोरी से बचना है तथा हर प्रकार से उन्नति करनी है। स्वामी जी ने दलित समाज के सैकड़ों लोगों को तीन बार गायत्री मंत्र का जाप करवाया तथा उसके अर्थ से परिचित कराया। उन्होंने कहा कि किसी प्रकार के गुरु मंत्र लेने की जरूरत नहीं है सबसे बड़ा गुरुमन्त्र गायत्री मंत्र है। यदि हमारी बुद्धि ठीक रहेगी तो हम गलत कार्य नहीं करेंगे। बुद्धि का ठीक होना गायत्री मंत्र का भाव है। तथा हम सब इसी मंत्र से परमात्मा की भक्ति कर सकते हैं।

सम्पूर्ण कार्यक्रम में अनेको बार करतल ध्वनि से उपस्थित जन समूह ने हर्ष प्रकट किया। इससे पूर्व स्वामी अग्निवेश जी तथा स्वामी आर्यवेश जी का शॉल उढ़ाकर तथा पुष्पमाला पहनाकर स्वागत किया गया। तथा आश्वासन दिया कि वे हर तरह से आपका सहयोग करेंगे। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

अखबारों की सुर्खियों से

शंकराचार्य के बयानों की निंदा, एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

शिवगंज। आर्य समाज एवं आर्यवीर दल शिवगंज के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहने पर शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती के बयानों की निंदा की है। साथ ही राष्ट्रपति के नाम का उपखंड अधिकारी वारसिंह दहिया को ज्ञापन दिया है। पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं ने ज्ञापन में बताया कि शंकराचार्य के पास इसके कोई सबूत हो तो उन्हें स्वामी अग्निवेश के विरुद्ध पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करानी चाहिए। अन्यथा शंकराचार्य को अग्निवेश से माफी मांगनी चाहिए। इस दौरान आर्य समाज के सचिन शास्त्री, घनश्याम, कल्पेश, पुरुषोत्तम आर्य, जेसाराम, हितेश कुमार, जीवाराम आर्य, महेंद्र कुमार, संदीप कुमार, भगवानाराम, मनीष कुमार और हारुण समेत अन्य लोग मौजूद थे।

आरोपों की निंदा

शिवगंज। शंकराचार्य सरूपानंद महाराज की ओर से स्वामी अग्निवेश पर लगाए गए आरोपों की निंदा की है। आर्य समाज के सचिन शास्त्री तथा हरदेव आर्य के नेतृत्व में सौंपे गए उपखण्ड अधिकारी को राष्ट्रपति के नाम सौंपे गए ज्ञापन में उनके लिए उपयोग में लाई गई टिप्पणी की निंदा की गई है।

आरोपों की निंदा

- आर्य समाज के पदाधिकारियों ने राष्ट्रपति के नाम उपखण्ड अधिकारी को सौंपा ज्ञापन

शिवगंज। सन्यासी स्वामी अग्निवेश के विरूद्ध शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद द्वारा लगाए आरोपों की निंदा करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारियों ने सोमवार को उपखण्ड अधिकारी वारसिंह दहिया को राष्ट्रपति के नाम ज्ञापन सौंपकर कार्यवाही की मांग की है। उन्होंने सौंपे ज्ञापन में बताया कि विगत दिनों धर्म गुरू शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती द्वारा सांई बाबा को लेकर की गई धार्मिक टिप्पणियों से उपजे विवाद के मामले में स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहा गया जिसका आर्य समाज कड़े शब्दों में भर्त्सना करता हैं। उन्होंने ज्ञापन के माध्यम से मीडिया के सामने सार्वजनिक तौर पर स्वामी अग्निवेश से माफी मांगने की मांग की हैं। इस मौके पर हरदेव आर्य, आर्य समाज के प्रधान शेसाराम सोलंकी, मंत्री हितेश एस परिहार, नरेश आर्य, घनश्याम, कल्पेश, पुरूषोत्तम आर्य, सचिन शास्त्रि सहित कई पदाधिकारी मौजूद थे।

स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहने की निंदा

शिवगंज। क्षेत्र के आर्य समाज के पदाधिकारियों व सदस्यों ने कार्यवाहक उपखंड अधिकारी हेताराम चौहान को राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी के नाम का ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन में स्वामी अग्निवेश को सरस्वती की ओर से आतंकवादी कहे जाने की भर्त्सना की है। इस मौके पर आर्य समाज शिवगंज प्रधान सेसाराम, छावणी प्रधान नरेश कुमावत व आर्यवीर दल अध्यक्ष पुरुषोत्तम सुथार सहित समाज के

आर्य समाज ने रोष जताया

शिवगंज, 21 जुलाई (निस)। शिवगंज में आर्य समाज के पदाधिकारियों व सदस्यों ने कार्यवाहक उपखंड अधिकारी हेताराम चौहान को राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के नाम का ज्ञापन सौंपकर विगत दिनों में धर्मगुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती द्वारा सांई बाबा को लेकर की गई धार्मिक टिप्पणियों से उठे विवाद के मामले में आध्यात्मिक समाज सेवक स्वामी अग्निवेश को आतंकवादी कहे जाने की कड़े शब्दों में भर्त्सना एवं निंदा की तथा शंकराचार्य द्वारा किया गया यह व्यवहार निंदनीय है। इस दौरान आर्य समाज शिवगंज प्रधान सेसाराम, छावणी प्रधान नरेश कुमावत, खाड़िया मंत्री कल्पेश कुमार, आर्य वीर दल अध्यक्ष पुरुषोत्तम सुथार, पुरोहित सचिन शास्त्री, चेतनानंद व्यायाम शाखा संचालक जयपालसिंह, भीम व्यायाम शाखा संचालक संजय मेघवाल, जीवाराम आर्य, हरदेव आर्य, लक्ष्मण मीणा, महेंद्र कुमार, मनीष कुमार सहित कई लोग उपस्थित थे।

thearyasamaj.org

NDPSo on 15/16 अगस्त, 2014 वैदिक सार्वदेशिक **14 से 20 अगस्त 2014**
प्रकाशन की तिथि : 14 अगस्त, 2014
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

सब यज्ञों का महान् तत्त्व विश्वतोधार होना

स्वर्यन्तो नापेक्षन्तऽआ द्या´ रोहन्ति रोदसी।
यज्ञं ये विश्वतोधारँ् सुविद्वा´सो वितेनिरे।।

=यजु० १७/६८, अथर्व० ४/१४/४

ऋषिः-भृगुः ।। देवता-आज्यम्ः ।। छन्दः-अनुष्टुप् ।।

विनय—हमारे सब यज्ञ 'विश्वतोधार' होने चाहिएँ, पर प्रायः हमारे यज्ञ एकतोधार होते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम दूर तक देखकर, सब संसार को दृष्टि में रखकर लोकोपकार नहीं करते, अतः हमारे ये यज्ञकार्य परिमित, अदूरगामी और एकपक्षीय होते हैं। हम केवल अपने समाज, अपने कुटुम्ब, केवल एक संस्था या केवल अपने देश व राष्ट्र के हित के लिए अपने उपकार-कार्य करते हैं और उनके लिए बड़े-बड़े स्वार्थ-त्याग तक करते हैं,पर यह ध्यान नहीं रखते कि वह संस्थाहित, देशहित, वह राष्ट्रहित संसार के हित के भी अविरुद्ध होना चाहिए। विश्वतोधार यज्ञ वह है जो 'सर्वभूतहित' के लिए होता है, जो सम्पूर्ण विश्व के भले के लिए, प्राणिमात्र के हित की दृष्टि से होता है, अथवा यूँ कहें कि जो परमात्मा की प्रीत्यर्थ होता है। वही यज्ञ पूरी तरह फैला, वितत होता है, व्यापक होता है। वही यज्ञ 'विष्णु' कहाता है। पर यज्ञ के इस 'विष्णु', 'विश्वतोधार' रूप को संसार में कुछ उत्तम ज्ञानी ही समझते हैं और ये विरले ही उसे वितत करते हैं, अतः ये 'सुविद्वान्' तो शीघ्र ही पृथिवी और अन्तरिक्ष के स्थूल और मानसिक लोकों को लाँघकर आत्मा के सुखमय और प्रकाशमय लोक में चढ़ जाते हैं, आसानी से पहुँच जाते हैं। वे उस आत्मिक सुख की ओर जाते हुए, उसका आनन्द लेते हुए दुनिया की किसी भी अन्य वस्तु की परवाह नहीं करते। 'विश्वतोधार' यज्ञ करने वालों को 'स्वः' का एक ऐसा दृढ़ अवलम्बन मिल जाता है कि वे फिर संसार के अन्य किसी भी सहारे की तनिक भी अपेक्षा नहीं करते। चाहे उनके साथी उनसे छिन जाएँ, उनका प्रभुत्व नष्ट हो जाए, उनकी सब प्रतिष्ठा जाती रहे, पर वे इन सहारों के रखने के लिए भी कभी अपने यज्ञ को थोड़ी देर के लिए भी छोटा, अव्यापक नहीं करते। वे अपनी दृष्टि को कभी नीची या संकुचित नहीं करते। ऊपर चढ़ते हुए नीचे की क्षुद्र चीज़ों पर कभी उनकी दृष्टि ही नहीं पड़ती। यही रहस्य है जिससे वे ऊपर-ऊपर ही जाते हैं और शीघ्र सुखमय-प्रकाशमय द्युलोक में जा पहुँचते हैं।

शब्दार्थ—ये=जो सुविद्वांसः=उत्तम ज्ञानी महापुरुष विश्वतोधारं यज्ञम्=विश्वतोधार यज्ञ को, सबको सब ओर से धारण करने वाले यज्ञ को वितेनिरे=विस्तृत करते हैं वे स्वः यन्तः=आनन्दमय स्थिति को जाते हुए न अपेक्षन्त=किसी अन्य वस्तु की अपेक्षा नहीं करते या नीचे नहीं देखते, रोदसी=वे द्यावापृथिवी को लाँघकर द्याम्=द्युलोक में आरोहन्ति=चढ़ जाते हैं।

साभार- 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :-

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

श्रावणी महापर्व पर प्रकाशित प्रमाणित जीवन चरित्र

योगेश्वर श्रीकृष्ण

लेखक- स्व. पं. चमूपति एम. ए.
पृष्ठ संख्या-256, मूल्य - 100/- रुपये

पं. चमूपति द्वारा लिखित "योगेश्वर कृष्ण" अनोखा प्रसाद जन साधारण के लिए उपलब्ध है। अप्रतिम विद्वान पं. चमूपति जी ने योगेश्वर कृष्ण का जीवन चरित्र निष्पक्ष एवं प्रमाण सहित लिखा है। यह जीवन चरित्र ज्ञान पिपासु व्यक्तियों के लिए हर प्रकार से पठनीय एवं संग्रहणीय है। यह पुस्तक 23X36 के बड़े साईज पर विलारपुर टी. ए. कागज पर मुद्रित है तथा कम्प्यूटर द्वारा तैयार की गई है। लैमिनेशन कर टाइटल को अत्यन्त आकर्षक बनाया गया है।

जन्माष्टमी से पूर्व अग्रिम आदेश करने पर यह पुस्तक मात्र 50 रुपये में दी जायेगी। अपनी धनराशि "**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**" के नाम "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर शीघ्र भेजें। दूरभाष संख्या-011-23274771, 23260985 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

(डाक व्यय तथा पैकिंग खर्च अतिरिक्त देना होगा)

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वेदों के पुनः प्रकाशन की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) तक अग्रिम राशि भेजने वालों को दिया जायेगा

मात्र 2100/- रुपये में एक सैट

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश '**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)

सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।